



I ISSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १३३ म अंक ०१ जुलाई २०१३ (वर्ष ६ मास ६६ अंक १३३)



१ अंकमे अङ्कित:-

१. संपादकीय सन्देशे

२. गद्य

—



२.१. कामिनी कामायनी- वयकथा-कैन डावि पब केकब खोता

२.२. सगब बाति दीप जवयक १६ म आयोजन कथा केसी डमेशे पासवानक
संयोजकत्वमे ठुकरामे सम्पन्न/ १० म सगब बाति दीप जवय सुपौव जिलाक



निर्मलीमे डमेशे माडवक संयोजकत्वमे बिपोरठ पुनम मन्डव

—



२.३. रिन्दुशेव ठाकुर- इष्टा रिहनि कथा

—



२.४. जगदीश प्रसाद मण्डव-वयकथा-चप्पा पाव



२.५. जगदानन्द या 'मनु'-अ ठा रिहनि कथा



२.६. अखिलेश कमार मण्डव-पँचरेदी



२.७. प्राङ्ग कापडा केशिराम राँख शिवपा सम्मानसँ सम्मानित बिपोर प्रनय मन्दव



२.८. डमेश मण्डव-वयकथा-जोरिते नरु

३. पद्य



३.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिन'-गजल १-४




३.२.१. कली कामत-गीत:- जठ-जठन २.




शान्तिनक्षी चौधरी-नेताजी




३.३.  जगदानन्द ना 'मनु'- के पतियाएत

३.४.  मनोज कुमार मन्दव-देशी कौआ

३.५.  रमेश कुमार कर्ण- गजव

३.६.  जगदीश प्रसाद मण्डव-सुखव काज

३.७.  राजदेव मण्डव- दु ठा करिता

३.८.  सए नावायण-बहकैत समाज

 बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड सागुठ

 VIDEHA MAITHILI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE



बिदेह ग्रा-पत्रिकाक सब्छा प्रवान अंक (ब्रैल, तिरहुता आ देरनागरी मे) पी.डी.एफ.
डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि । All the old issues of
Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari
versions) are available for pdf download at the
following link.

बिदेह ग्रा-पत्रिकाक सब्छा प्रवान अंक ब्रैल, तिरहुता आ देरनागरी रूपमे Videha
e journal's all old issues in Braille Tirhuta and
Devanagari versions

बिदेह ग्रा-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बिदेह ग्रा-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक



बिदेह आर.एस.एस.फीड एनीमेटरकेँ अपन साइट/ ब्लॉगपर लगाउ ।



ब्लॉग "लेखाउठ" पर "एड गाडजेट" मे "फीड" सेलेक्ट कए "फीड यू.आर.एल."
मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठाँगप केलासँ सेहो बिदेह फीड
प्राप्त कए सकैत छी । गुगल रीडरमे पढ़ाई लेल <http://reader.google.com>
पर जा कए Add a Subscription बटन क्लिक करू आ थाली स्थानमे
<http://www.videha.co.in/index.xml> पेसस्ट करू आ Add बटन दबाउ ।



Join official Videha facebook group.



Join Videha google groups



बिदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पौडकास्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>



मैथिली देरनागरी रा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पारि बहर छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari / Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाऊ । संगहि रिदेहक सुँभ मैथिली भाषापाक/ बचना लेखनक नर-प्रवान अंक पढ़ू ।

<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीँकमे ऑनलाइन देरनागरी ठाँप कक, रीँकसँ काँपी कक आ रडि डाक्यूमेन्टमे पेस्ट कए रडि फाइलकेँ सेर कक । विशेष जानकारीक लेल ggajendra@videha.com पब सम्पर्क कक ।) (Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM) / Opera / Safari / Internet Explorer 8.0 / Flock 2.0 / Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old issues of VI DEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio / Video / Book / paintings / photo files. रिदेहक प्रवान अंक आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ (उच्चारण, रीँड सुथ साव आ दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड करबक हेतु नीचाँक लिंक पब जाऊ ।

VI DEHA ARCHIVE रिदेह आर्काइव



जातिबिम्ब पुरी महकरी रिद्यापति । भारत आ नेपालक माईमे पसबन मिथिलाक धवती प्राचीन कालसँ महान प्रकृष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहर अछि । मिथिलाक महान प्रकृष ओ महिला लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखू ।



गौरी-शैकवक पातरणि कानक मुर्ति, एहिमे मिथिलासुवमे (१२०० वर्ष पूर्क) अन्तिनेथ
अंकित अछि । मिथिलाक भावत आ नेपालक माईमे पसवत एहि तबहक अन्तान्य प्राचीन
आ नर स्थापन, चित्र, अन्तिनेथ आ मुर्तिकानक हेतु देखु मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अन्वेषण सर्गहि बिदेहक सर्च-अङ्गन
आ नृज सर्गिस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेससाअर्थ सभक समग्र
संकलनक लेल देखु बिदेह सूचना सर्पक अन्वेषण

बिदेह जानबुक्त डिस्कसन फोरमपब जाड ।

“मैथिल आब मिथिला” (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानबुक्त) पब जाड ।

२. गद्य



२.१. कामिनी कामायनी- वयकथा-कैन डाबि पब केकब खोता

२.२. सगब बाति दीप जवयक १७ म आयोजन कथा केसी उमेशे पासवानक
संयोजकतुरमे ँबकामे सम्पन्न/ १० म सगब बाति दीप जवय सुपौव जिलाक



निर्मलीमे उमेशे माडवक संयोजकतुरमे बिपौर पुनम मन्डव



—



२.३. बिन्दुशिव ठाकुर- ३१ रिहनि कथा

—



२.४. जगदीश प्रसाद मण्डव-वधूकथा-छप्पा पाव



२.५. जगदानन्द या 'मन्त्र'-३ १ रिहनि कथा



२.६. अश्विनेश कुमार मण्डव-पँचरेदी

२.१. प्राज्ञ कापड्डी केशरनाथ राय शिवपा सम्मानसँ सम्मानित बिपोर

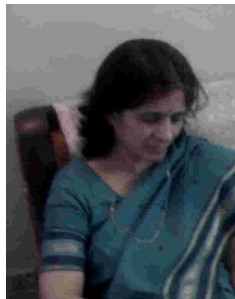
मन्दव



पुनम



२.७. डमेश मण्डव-वधूकथा-जीरिजे नरक



कामिनी कामायनी



वधुकथा-

কোন ডাবি পৰ কেৰব খোতা ।

“যেই রহিন, কনী খমি জৌথ, তিরকৌড ক তকরা তেঁব বহন ছিএন্দ, তখন ‘খগনথি’ ।
 রহিন ওসাবা প বাখন পীড়ী প রঁগস গেল ছনিহ, সোবনা পবসন খাবী বাখন ছন, দিনক
 এগাবহ রাঁজি বহন ছন, কদরঁক গাডু কে ঙুপব স স্বকজ মহারাজ দুনিয়া ভবিক গাম
 ঘবক হিসারঁ কিতারঁ নেরাঁ নেল ক্ষুউদ ভেল ঞপন তাপ স চহু দিস কে খড় পাত ধবি
 মবকা বহন ছনথি । , আয রঁঠেদাব সরঁ স খেত পখাবক হারঁ ডীরঁ নগ্নত নগ্নত রঁড
 রৌব ভ চুকন ছন, ক্ষুধা তীব্র ভ গেল ছনৌহ, রঁজনী “আরঁ বহয দিও এখন, বাতি ক
 রঁনা নেরঁ, এখন খছ আরি জাঙু খেরাঁ নেল, খছ কে ভুখ নাগন হৈত । ক্ষদা তারঁেত
 ত পহিনহি স ধধকন চুলী প চড়ন নোহিয়া মে কডুক তেল পড়পড় ায নগনৌ ত
 কেবার ক ঘাঠি মে পাত নঠপঠা ক হরঁব হরঁব নোহিয়া মে খসা চুকন ছনিহ ।

হুক ঙ তপেবতা ঙা ঙন্ববাগ দেখি ক ,ও কনী কাত ত্রে হাথ রাঁবি নেনে বহথি ।
কনী রিরঁ স দু নু গোঠে সোম্মা সোম্মী রঁগস ক মৌন ভ ঙপন ভোজন গ্রহণ কবয
নাগর ডুরিহ ।

নরকা ভী জেন কে লোহা বন্ধু সীমেষ্ট স বনর ঘব জে সারিকক খবহান মে
 বনর ভুৱ,ও ত বহিনক ভুৱেহ,কনিয়া কে বঁধবা মে ত পুৰনা খপড়'ন ঘড় পাড়ী, হুদা
 আৰি কোন,দুহ ঘব ত খপনে সন । ওহু ঠা চাস বাঁস হুদা বহনীহবি ,জেনা
 বঁডকা পোখবি মে দু ঠা পোঠা মাছু । খল্ল পানি কোঠা,তোঠা মে বখনায,উসীনিয়া
 ফুটিয়া আৰি পুৰনে আঁগন মে হোয এক্কা দুগী জে সব কষ্টম আৰেন ত হুনক বহৰি কে
 বঁৰঁস্থা নরকা ঘব মে হোয । ওহুনা মন বঁৰঁঠাবয তেন ও দুব কখনো অহি ঘব ত
 কখনো ওগা ঘব মে দিন ৰ বাতি কাঠি নগ্ৰথ । ওনা ত চোব চহাবক হদস লোককে
 পহিনহু পগ্ৰসন বহে ,হুদা আৰি কষ্টকো ঘব জিনক হুথিয়া বাঁ কহদীপক পবদেস কমাগা
 কবয গেন ভুৱেথ,ওত ত বঁসেথ কপে বতিজগা ভ জায । আ হিনকো দুব কে
 পবান সদখন সিখুৱা মে বঁল তড়পগত বহেহ । কহৰোঁ কবথি 'ধন সঁপতি কুঠৰা কে
 ডব নহি, স্ননে ডিয়ে জে মৌগী সৰি কে হাথ পএব কাঠি ক ,কী বঁড় ,কী বঁচা ,সৰহক
 গজ্জতো সেহো ব্ৰগ্ৰঠ নগ্ৰতডেক' । আ অহি ডবে ঠৈলক নবঁতুবিয়া বিয়া পুত্ৰা সৰি
 কে বাঁডী মে ফড়ন বতাম ,নেৰোঁ ,ত কখনো কেবা, আম ,কঠহব ,নীচী ,



बाँष्टि क मोने मो न अपन ब्रोज तैयाब केने बैथ जे रैब करैब गदह केना प
आन कियो आरै रा नहि आरै अहि मे स किछु ने किछु त अरिस्त्र आयत । आ ओ
सर कहरो करेन 'एक रैब ठाक देरै त केहना नीड मे बहरै ,दौगर चलि आयर' ।

ओ दुनू घबक रीचोरैच कनि पढुराड़ १ दिस घसकिक तेसब घब सेहो ईरुब
ईरुब ,माय ईरुब सन ताकेत ठाढ़ छन,झुदा तैयो एब स भवर ओ घब हिनका सर
के श्रीकाब नहि केकन्ह तारी लेन उमहबक बस्ता ठाँठ फुँडा नगा क रैड पहिनहि रैन
करी देन गेन छन । ओहो घब अहि दुनू घब प अपन रफ दृष्टि बखने छन फुवाके
स ।

जेठ रैसाथ क उमिनति गवमी , कतरौ पंथा ,कुनब नागर बैह ,मोठका
मोठका पर्दा थिड़की प बैह ,झुदा नरका घब त बाकसक झूठ रनि आगि उगले , एठ
के भङ्गी रैनन । तखन कनिया के माष्टिक ओसावा राता दछिनरबिया
घब ,आहाहा ,एकदम शीतर ,जेना स्रग्ना , रौड़ १ म्माड़ १ स सीहकेत रसात । त रैसी
कार गवमी मे रैनन ओहि ओसावा राता घब मे नीचा रिछाओन पठिया प ,भात तीमन
जे रैना रैथि कनिया प्रेम स ,था क , ओघडाघन बैहत छनी । पहाड़ सन दिन काठय
लेन नछा के नछा ओमवार गप्प के पैठार थोतर जाय । आ प्रवथा ,सब
हुँदुम ,राध रैन ,खड़ सीया पड़ सीया केकब कहाँ ,सरहक कर्म हुकर्म कतेको
रैब पुनर्मूर्ताकन केन जाय । अहि एतिहासिक गप्प गोथी मे,दूपहरिया मे
रैसी कार ठैलक स्त्रीगन सेहो सर जुँथि,आ गामक ज्ञात एतिहास के कपक आ
क्लपक सहित ओहि महान घड़ ाबीके सौजन्य स नरीन दृष्टि स जनेथ । “भूपिंदर
कका के पेरवार त रिताए गेलै ने । देखियो ,केहन उजाड़ नागै छैह हुनकब
डीह । पहिने जखन हम दूवागमन करि आयन बहि,काली के भागक चर्च घरे
घब ,सात ठा पुत ,दू ठा छोटका भविसक रुमाव छनैह,भवि घब पोता पोती ,काली
के हुकमति चलय छन घब मे । कनिया देखय त तीन चाबिरैब आरैथ, “कनी ठा
झूठ हमहु देखरै” तीन रैबथक पोथी के जिद ,आ म्मा कोहरैब मे आरि क हमब
घोघ उघाबि क देखा दगथ । चूचूरी स भवर ,रैडका नाम गाम राता हुँदुम सर के
आराजारी ,देखिते देखिते आरि केहन उजाड़ भ गेलै । रैदनि त सौसे गामे
गेलै ,भग्याबी मे रैष्ट रैखवा होगत गेलै ,किओ रौड़ १ त,कियो ,गोहारी ,त कियो
थबिनन मे चास रास रैना लेनके ,झुदा हुनक पेरवार त उपरै गेलै जेना एतय
स” । “से की कह छथिन्ह,महारौ के डीह देखथुन ,रैडका रैडका पाग राता रैष्ट
सर ,ओहन सुंदर घड़ ाबी तौड़ि क नरका डी जेन के घब त रैनरा लेनथि , केहन
गलेन रिठेन सन नगे छैक आरि,कियो गमहब स थिड़की नोचनकेन्ह,किओ उमहब स
दवरज्जा,रौड़ १ के चहबदेराबी ठाहि पजेरौ पर्यंत सर उघि ‘ न गेनय । लोक के
लोक कहे छै जे रैन पुत के डीह रिनष्टि जाय छै ,हुनक त पुत बहिते उजाड़ भ
गेनन । खेत पथाव त अपन अपन रैचि लेनथि ,झुदा समिया के मकान , ओहिना



संभा राती धरि जेन मूँह तकेत , नाँव रँहरैत , के तकरय एतौ घुँवक दसो रँवथ
स' । ओतु ठाँ के दुपहरिया , रूँद प्रवान , की जुरानोँ सरँ प्रवथा के गप्प , दुवथा के
गप्प , संपत्ति रँठरावा के गप्प , रूँद नरँ के बास नीना के गप्प , ठेव बास गप्प क
सिडली प चढ़ैत उतरैत दिस काँटि बहरन छरी । ओना आरँ ओहू ठाम ठीरी आरँ गेल
छने, मूँदा रँसी कार रिजली कँठे बँहक, आ बहरौँ करे तड़ाओ एहेन गौछी के आनंद
रूँद प्रवान के जेन भगरती के रँवदाने रूँम् । प्रवान दिन के पागुव करैत हुनका
सरँ के आँखि मे दोसरे चमक उठि जाय । जोजो रँरूँ के थिम्मा प
कनिया त हसेत हसेत रँहार 'कोना हुनका लोक सरँ रँकलेन करैह' ओ रँताह ने
घताह छनेथ, आरँथ अपन भाँज स भँठे कवय आ भवि छैन मे आँगने आँगन घुसि
क जनी जाति स ठाँ करैथ, किओ करैह , कनी एक ठाँ गीत सुनाउ , आ ओ ओहि ठाम
धुँस स रँसि जायथ, घँठे हिरा हिरा क , आँखि नचा नचा क नचावी, कजरी , त मूँम्बी
गीत सुक कवि देख । सुनरौँ केहेन, पाँच हाथ के धुरा, दप दप गोव , भात प नात
सिंदुबक ठोप ।

कारक प्रराह के त्रास रँनर कतरौँ लोक गाम स उपटि क सहव दिस भाँगो, गाम
मे त लोक रँद बहरै कवते न । आरँ कीछ सहवि क भीड़ भाड़ स , समझा
स , रँरोजगावी स , गवाकष्ट कपीछीन स , मशीनी जिनगी स उरि क गाम सेहो आरँ
बहरन छथि । रिराहदान , मूँडन उपनेन , एकादशी के जग , पुजा हरन , सरँ किछ त
यथारत चलेत आरँ बहरन छन, नरँ लोक उमोह स जीरँ बहरन छन , प्रवना लोक सरँ
हाकँ , थीनेत, भोथवायन , भसियायन रूँछि , कमजोव , सनकरन, सनकरन दृष्टि स देखि
बहरन छन , नरँ जुग के , आ अपन मनोरथा के , कँठा के , अचछी , कचछी रँरजि क
निकारि जेत छन । कोनो एक थिम्मा प हुनका सरँ के हजाव थिम्मा मोन पड़ै
। आ पचासोँ रँवथ पहिन्नका रँठरावा स आजुक समाज के तबाजू प तौलेत, केहेन
छछ , केहेन हीन, कतेक गर्हित नगँह , से हुनके सरँहक आमो जनैक । देखियो
रँरेन के रँछी के , चतुवथी स पहिनहि रँव सर्ग , पदुरा के बिकास प सिनेमा
देखय मपरँनी जा बहरन छन, त राँपे रँजरथिन “बिकास स जेमए त फिल्म छुट्टि
जेतो , चन , हम अपन मोठवसायकिन स छोड़ि दैत छिओ, हमरो कोठि ज़रौँ के
अछिथ । आ रँरजि क भवि पोथ हसली मनोजक माय । “ये रँहिन ग्रा कोन
अजगुत गप्प कहनथिन , देखनथिन्ह ने चुनारन के रँछी के , राँपक रिराह कवाँत
रँव के छोड़ि क अपन मन माफिक मनसा स दोसव रिराह कवि जेनके , माँ ओकव
सेहो आरँ सीना चाकव कवि क रँजेत छै “ह त कोन जुन्नम
केनके , पियकड़ छने, ओप राँध कवि क मारे छने , त ककरो दरंग ने उठने हमव
रँछी जेन आ ओ जौँ ओकवा स पिँड छोड़ि । क पडायन त , लोक क करेज मे किअक
पाह उठैत छैक' । आरँ कहथुन' ।



कनिया के प्रविषा ओसावा दिस स आम बास्ता छल त ओ सरै ओहि ओसावा प नहि रैस क ओहि स सभै कोठरी मे रैसारी करैत छली । कोठरी मे दु ठा थिड़की ,एकठा प्रै दिस ,एक ठा दछिन दिस । दू प आधा आधा पतवकी ,छाप रौनानुआ के पवदा नागल,ओकरो मोड़ी क किम्बो घुस्का दगथ,तखन ओहि राई स जाए रैना लोक सरै प नजबि सेहो बथथि,अ मनसा कोन गामक छै ,किनको कछुम त नहि छैन,आ जौ कोनो छैनक एहेन लोग नजबि पड़ी जाथिजिनका स आना माना बहेह ,त हुनक जतवा भंगछारै लेन कागद ,रा आचरिक खुँ के राती सन राई क ,नाक मे घुसा क जरेबदस्तु छीकल जाए ,कतक रैब त अहि अपसहन स लोक सरै आपस घुलब जायथ, । आ अहि स स्त्रीगन सरै के रैड प्रसन्नता होय । हुनक सरैक निक जका मोन रैहछै जाए ।

भोकका तारा के देखि क दू गोछे उठि जायथ अपनअपन ओछोन प स ,नहा धो क ,भगरती नीप क ,पूजा पाठ के काज स जारेत निरुत होथि,तारेत सुबज् क चक्का एक रीत उपव क्षितिज मे छगा सरै ठाम हुनकी मारेत बहेत छल । नरका घबक उपवका मजिद के त्रीन मे रैसि दू गोछे स्त्रीन के गिलास मे चाह पीरैत कार छैन भवि के अरनोकन करैत छली । रैहिन त अपन दुमीव के रैडका हिम्मा सहरे मे काछने छलिह,आरै न त्राम रासिनी भेलिह,झुदा आदति सरै दिन स काक रैजरी स पहिनिह उठरी के बही गेल छल । तहिया त आध छिप पूजा करि क घिया पुता लेन जलथग ,पनपियाग रैनारै मे जूछै जायथ,ओसरै आ पीरी क स्नू जाय त कनिकार मे घबरैना के अफिस जेरौ के समय भ जाए ,हुनका गेला के रौद घबक न्नाड़ ,पोछा,रौछी भवि कपड़ । धोरैत नीत दिन रौबह एक रौजि जाय । कहिओ ओ एक ठा नौकब रा काजरीनी नही बथली ,देहो भगरती के कीवपा स तंदुकु छल,आ हाथो के रैड सकत,जखन दू पाय ककरो दैतथिन नहि ,तखन कियो हुनका ओत अपन झूह रौहि क त नहि काज करिहैह । झुदा रएह रैहिन जखन सास के सोना गाम आरैथ त अपन प्रविषा घबक परग प छिन्न पडल बहेत छली ,काजरीनी सरै काम कवरै करैक,हुनका जाँतय पिचय लेन एक नौड़ ी क्वाक स बाथल जाय ,जे हुनका नहारै सोनारैय, नुआ कछा सेहो धोरैय ।

सहब जेरौ कार कनी कछु त मोन मे अरस्य होएन ,झुदा ओहि सहबक नाम प त अ बाजसी ठाठभैछल छल ,अ सोछि अपन दियादिनी सरै प उपेक्षा के दृष्टि, फेरैत तगा प रैसी क गाड़ ी पकड़री के लेन मधरैली जाय छलिह ।

कातिकी पूर्णिमा के दिन दोसब गाम के देरी मदिब प भगरत कथा के भरा आयोजन छल । जगननाथजी स रिद्वान पडित सरै आयल छलेथ, कतेक दिन पहिनिह स प्रचार भ बहल छल, लोक के उम्मेकता हिय मे हिनकोब



मावय नागले । कहिया स नियावति नियावति गामक ठेब बास स्त्रीगण, प्रकथक सर्ग
ओहो दुनू बिकसा प रैसि क नहा सुना क भोरे भोरे रिदा भेरे बहथि ।

सजोग देखियो जे ओ सरौ उमहर गेनथि, आ गमहर रैहिनक कहुँम आरि
गेनथिन, दुनू घबक कंडी मे नैकन तारा देखि क तेसब घबक दुबथा नग ठाढ़ कहुँम
के हुनसि क सुखागत कबरा नैले ओ दवरैज्जा सुतह खुजि गेन बहे । भोजन
भात करि क पाछन कनी कार रिश्याम कवय नगला त हुनक स्त्री घबक ओव भीतब
पगस तेसरा घब स खनुबाग रैदरैय नैलेखकनाय नगली । भाग
भोजन दुनखीन, गमहरे समझियोन मे आयन दुनह, त रैहिनो मोन पड़ि गेन दुनैलेह
। कदा भोज के त नीक मौका हाथ नगले, ननदि के अतीतक उद्यान मे भ्रमण
कवरैके । हुनको ओ कहिओ कनिओ मोजब नै देने दुनथिन, ततेक थमान दुनैलेह ।
आ तेसरो घब के आय अपन पीव उगिरा के पवसब भेठेले ।

आ थिम्सा के दोसबि छेब कम्हाक चक प गढ़रौ नैले उमठ भ हब हब क
रैहवायत गेन ।

तीनो कबीर मे, रैष्ट रैखवा त कहिया कत नै भ चुकर दुनकहे नैले त
आरि दुगए कबिक रचना रैडका आ छोटका, कदा तेसब समाव स प्रस्थान कबरा स
पुरि अपन स्त्री सर्ग एक ठा कंठिबरी सेहो छोटि गेन दुनथि । ओहि गृधकनिया
दङ्गात पिया के कपाव देखि पित्री अपना ओत न गेनथि, अपन रैष्टी त नहि देनथी
भगरती, एकरे पानर पौसर, पठायर निखायर, कन्यादान कवरि, आरि माय के कतुरौ
मोन छुटपठेनहि, सोस सेहो खुष्टा जका ठाढ़ भ गेनथि ‘ओ आता के रैष्टी
के अंदासनक पबी रैनरैय चाहेतहुथी, आ आता छुट के रिनाप कय बहन छी’ । तखन
सरहक रिचारे माय पी दुनू सहब चलि गेन दुनह । रैबस दिन प माय त आरि
गेली, थिम्सा के पेटाव नेने कदा रैष्टी के त स्त्र मे नाम निखा देन गेन बहे ।

माय के मोन जखन रैड छुटपठाय, त पौस्ट ऑफिस स पौस्टकार्ड मंगरा क
जोड़ि जाडि क निखनाय सक करैथ त कनैत कनैत कतेक पहब रीत जाय ।

अरैले दूरले प सिथ्या दोथ, त मोसिरैत के मावले के, अपन बम्हा कवय
नैले रैसि कार जिह्वा प दुरसि के रास

, कवारैगए पडेते दुन । ठोढ़ी या साप के कप सेहो अख्ति याव कवय नैले
लोकरेद राधा करि दैक ।

पान सन जीरेन पठाड सन दिन काठे नैले गाम घब मे लोक रैद के अकार नै
बैहते छैक । पहिनुका जुग मे त गप्प सप्प सर्ग भाति भाति के काज रंधा सेहो



चनेक,रुमावि रैष्टी के बिराहक नेन सिकी के योनी रने ,गेकथा के थोन प जोड़ ।
सुग्गा ,गुनारक हुन काढ़न जाए ,जनेहु कष्टन जाए चबथा काष्टन जाय ,झुदा ताहिया
राजाव घरे घब नहि घुसन चन ,था ने चीनक सुंदर सुंदर समान एना लोकके मोहने
छन , 'ए' के आधि होड़त अप्पन, राजाव मे एक स एक निक चीज भेष्टे छै'राजा
प्रनयकावी राति मे सर किछु भासियाएन जा बहन छि । आर त रिश्वर गप्प ,नरका
शिक्षा के भूत ,गाम घबक लोक के कोढ़ी रना बहन छि ,तखन अहिना कतेको
थिम्सा के जग्य होड़त छैक था सोझवीए स पाथि नगा ,रैद थिड़की ,दबरज्जा के
अछैत खुजल आकास मे उड़य नागेत छन । ओहि थिम्सा सर मे कनिया के नाँव
स सानन जिनगी के कतेक बास दूख बहे ,से कतेको लोक ने करेज मे रैबडी
सन गड़त बहनै ।

उपजा रौड़ १ त हुनकब ,जिनकब,समांग , खेत खबिहान छन ,हिनका त मात
घड़ १डि , था ओहो सारिकक घब ,रैडका रिशोर जे बहन होय ,झुदा भदरावि मे
जानक आहत ,कथनो अमहब स चुरै,कथनो अमहब स देरान खसि,था एकब मबन्मति
कबरय नेन कनिया के कतेको मास रैबस दिन धरि रैहिन के छिप्टी प छिप्टी पठाँरै
पड़ै ,तीन चावि रैबथ मे किओ सहवि स आरै,था जारैत ओकवा दूकस्त करै,तारैत
कोनो ओव समझा ठाढ़ भ जाए । एक रैव त रैहिन गाम आरि क सरहक सोना मे
हुनका रैड फज्मति केरकिन 'अहा त अहिठाम आवाम स रैगसन थाय छी,आहाँ की
बुमरै सहब मे पैतराव न क बहे रैना के कतेक बिबीशिनी स दू चावि होमए पड़ै
छैक । आहाँ के रैष्टियो के जिम्नरावी हमी सर उठेने छी ,तङ्गाओ आहाँ चैन स हमवा
सर के नहि जीरै देरय चहेत छी । हिनकब रैनडप्रेसब रैठिगेन छहि । हम त
हुनका कोनो काज कहिते नहि छिअन्ह ,गिरे पड़ै छै घब त गिबय दियो ,रावह ठा
कोठवी छै ,जखन सर खसि पड़ैत ,तखन देखन जेतै' । ओहि रैव स ओ कतरौ
कथ होयन्हि , हुनका छिप्टी नैग निखनखीह , 'बुमर जे हमवा किओ नहि अछि अहि
समाव मे' । था चारो कात स घब खसि क भुतहा हरेनी सन नागै ,साने नानठैम
जवाक दबरज्जा प बाथि देख,जे खसन पजेरौ स राँठ रैष्टेहिया के ठैस ने नागि
जाय ।

थेरा पिरा नेन सान भवि के अन्न हुनके दिस स देन जाए ,था रौड़ १ नारु १ मे
तीमन तबकावी त उपजिअ जाए । झुदा कनियो के अपनघबरौना स रैसि कोढ़
रापक देन गहना गुरिया हाड़ै ,चंद्रहाव ,नथिया ,पीका ,कर्ण
हुन ,राजा,अनत ,डढ़कस,पाजेरै , सरैठा त रैहिन रैक मे बथरारय के नाम उतवरा
नेने बहथि । रौद मे कथनो ओकब चर्च करैथ , त रैहिन के करौछ सन रौन स सम्पूर्ण
देह मे आगि नेस दै "आरि गहना न क की कवरै ,नग मे बाथरै त ओहो डकुरा
बगष्ट क न जायत,भने रैक मे बथन छैक' ।



अगहन मे रा माघ मे, किंसयातओ कोनो जाड़ो मास छल, जखन रँहिन सपेनराव सहबि स गाम रँष्टा सरँहक उपनेन् कबरौ नेल गाम आयर छनिह । तहिया त गाम गामे छल आ छैन सेहो समस्त दुर्जा स सम्पन्न, जन धन स सरँ डीह भवत । एके दुर्गा लोक गाम स रँहवाएत छल, झुदा गामक मजगुत डोव ओकरा खाँचने बँह । मङ्गया त रँवथ दिन पहिनहि स अहि शुभ दिन के ओबिओनमे कोरहुक रँवद सन बाति दिन रँसवत नागत बहत छली । आँगन मे ओसावा सरँ प ओछाओत पठिया सरँ प पतियानी स बाखत बाहड़ि, डुडेद केवार, तीसी, मङ्गु आ, मकङ्ग, धान, सबिसरँ, आने की जतेक अन्न उपजा क रँष्टेदाव द जागत छल, मङ्गया ओकरा अपना हिसरँ सगतने जा बहत छनिह, दानि दड़वराक भुसा सहित छोड़ने छनिह, आ ओकरा कष्टकरौ नष्टकरौ क पैघ छोटै कोठी सरँ मे बथरँय छनिह । तखन एक दिन कनिया के मोन मे अघनिह, उपनेन हेतैक, एतेक लोकरेद, सब-कष्टम सरँ ओताह, तखन ओ मङ्गरी प चढ़ि क रँकखा सरँ के की भीख देतीह, हुनकव हाथ त ठन ठन गोपार । आ रँड सोचि रिचाबि क मवतिया रौली पेष्टे दस सेव बाहड़ि, दस सेव मकङ्ग, पाँच सेव खेवही, पाँच सेव केवार, थोड़ो गहूम, थोड़ो धान रँचि नेलखी । कीछ पाय हाथ मे आरी गेलन्ह त छौँ रँकखा नेल गामे के सोनवरी स सोनक गुंठी गढ़री नेलखि, ओहो मैना दीदी के नेहोवा पाती कबी क ।

ङा सरँ कारोराव त ततेक प्रभु भेल बँह, जे घबक कोनो चाव प कोनो काव कोखा सेहो नहि रँसत छल, नहि कोनो कोन सानि मे नठिया, गीदड़ रौ रँनड़ि ए नुकाएत

छल, झुदा तैयो ङा गप्प जखन उजिअने, ओही घब मे रँडका भुङ्कप त आरिह गेल छल ।

जखन रँहिनक स्नामी रौप रौन दिस गेला अपन खेत पथाव देखय सुनै, त कसियावक टोबि के दाग स झुजि पारँय नेल रौसेसव हुनका कान मे हुनके आँगनक कबनी फुगकी देलकैह ।

आँगन मे पाहुन पड़कक आगमन प्रावन्त भ चुकल छल, कनिया अपन कोठरी के पठ रँन कबि के कनेत बहनी । हुनकव छदवपन, हीनता, आ पापक पोथी नेने रँहिनक घबरौला ज़ाव ज़ाव स आँगन मे रौचि बहत छलैख “अही घब मे आरँ की ओथोन होयत, जखन घरे मे मुस नागत अछि” । आ दुन पवानी हुनक हाथ के छल पाङन धबि नहि पिरौक सम्पथ खेलाह, जखन कि तहिया सरँष्टा खेत पथाव समिअ बहेक ।

‘दसवथ के अँगनमा मे शुभ हो शुभ’ रँड ज़ाव ज़ाव स होमय नागत, झुदा काकी शुभे कोना कहितथ, ।



उपनेन् के दिन सरै कष्टमक उपहास पूर्ण नजरि स रँचरौ के नेर ओ अपन कोठरी स नहि निकसन छनिह, तीन दिनक भुखन पीयासन, चारौय दिन अनखन सँय मे छोटो रँकथा नेर रँनाओर ओठी अपन सौसक हाथ मे बाथि पठि हेल रँन क नेने बहथी । हिनको जिनगी स मोह कोन रँचन बँहक, रँष्टी के पाव घाँठ नगरँय नेर भगरती छनिह । तखन स्वतरी बाति मे छुट के नाज निहाज के तिराँजनि दगत निकनि गेली नरँकी पोथवि मे भसियारँय नेर । कनीए दुब प रँदरौ कोतरौन उधो छैकि देनकेन्ह ‘ कतय जाय छी मनकानि ? ’ ओ की चीन्हने हेतेक ओकव आथि मे त बतौनी बहे, झुदा उज्जव नुखा देखि भेलय कोनो दाय कानी हेतिह, आ जौ चूड़न हेते त तकरो कष्ट छन ओकवा नग । तही नेर कनी उचगव स्रब मे ओ रँजत छन, आ ओहि स्रब प नगे के दानान प स्वतन दिनेशिक आथि खुजि गेल छन, मान्य रँष्ट प आरि ओहो ठाँठ भ गेलो । किओ किछु ने रँजत आ ओ स्रत रम्र पाविणी आगा पोथवि आ गाढी दिस रँदरौत बहन छनी । नरँ शोषित दिनेशि पहिन रँब कोनो भूत रा चूड़न के पछोड़ धेनक, सर्ग मे उधो मन रँठेनके । पोथविक महाड़ प आरि ओ पनष्ट क तकली, दोसब पहवि बाति मे आधा चान आकास मे चमेकि बहन छन, आ त कमतौन रँनी कानी छथीन, दिनेशि चोकिर, छैनक नम्रष्ट कसाद स प्रकथो सरँ पविचिते बँहत छनाह । छपाक के स्रब स ओकवा सरँ मे चेतना आएन, आ हुनक पीछे प दिनेशि पानी मे छुनाँग नगा देने बँहक । पौड़ कि हुनका रँहव आनन, ओ त अचेत भेल । पहिन रँब गामक अतिहास मे एहेन थिसा भेल बँहजे निसावाति मे भगरति पानि मे डूँरन प्राणी के रँचा नेरथ । झुदा किओ एहो रँजत छन, अकथज ने मरै, छुतहव ने फुछै । रँहिन के डरो पहिनहि रँब भेलन । प्राण पवरी जेका प्रक प्रक कवय नागर छन, आथ जौ किछु अथनाह भ जयते, छैनक लोक जिनगी भवि हुनके उपवाग दितेन्ह । दानान प रँसन नक नक उज्जव कबता, साँची धोती आ रँडी पहिवने रोखारी मात्रिक के एक ठो अदृष्ट भय सेहो पङ्गस गेल छन । तहन निरँनक पछ मे उठन लोक क दया माया देखि दून रँकती कनिया के हाथ पखजोड़ ी क शाँत केने छनथी ।

रँष्टी के रिराह मे त एक ठो दमड़ ी ने देरँ पडनेन्ह, झुदा झुगता प आगि त जौते देतन्ही, आ कन्नाक रिराह कतरौ आदर्स हाँक, घबरँयाके त रँब तक मे, दौड़ रँवहा करेण पड़ै छैक, जेना गीध के पियान झुगन जानरँबक मौस प बहे छै तहिना कोनो कोनो नाथे हुनक रँखवा के जमीन जथा ओ अपन नाम प लिखरौ नेने बँहथ, आ हुनका अहि सरँ नम्रष्ट स झुँज कवि देने छनेथ ।

कतेको रँवथ रँतने, रँहिनक सरँष्टी रँष्टी के रिराह दान भेलन्हि, सरँ अपन पैतराव रँठारँत आन आन सहवि मे जे गेलो, से आपस झुँडि क रँहिनक अँकव के रँवकँत नहि होमय देनथिन, कोनो प्रतौह हुनका अपन नरँष्टी प हाथ नैवाथय देनकेन । घब राना के बिँषयव भेलोपवाति गाम मे अपन नरँ मकान रँना क बहय नागर छनिह, झुदा तखनो हुनक दोसरे पाह छनेह । कनिया के खसन घब के



मवन्मति कबरौ देन गेन छन ,रूदा ओकब मानिकाना हक रैहिन सरे के हाथ मे छन ।

कतेको रैवथ रीमाव पड़ ी क मानिक जखन गोनोकरासी भेना ,रैहिन निताँत एसगकरा । कनिया के रैष्टी रैवस दू रैवस नेन माय के घुमारै ए फिबारैय ने न जायन्ह,सरैष्टी तीर्थ सेहो कबरौ देनकेन्ह । देखि देखि क हुनक कोढ़ काड़ुन्ह,आय धरि त ओ दुनि ए दारी मे बही गेन छनथी,आरै त कोनो रैष्टे ने हुनकि मारे आरै ,ह कहिओ कान हान हान कवि नेष्ट त समिने रूदा ओहो आरै ने खारी रैजरे तौही आरै जई ,जखन अपन कोथिक जनमन खान भ गेन त खान क जनमन के कि ए गावि सराप दगतथी, कहरीओ छै जे जहन रौह नगतौ कान तखन माय हेतौ खान । पौसने त रेह ओहि रैष्टी के बहथी,रूदा कतेक सिनेह स से हुनक आमो जनेत बहेह ।

जखन रैहिन रिद्धत भ क कनेथ, हिममत जूष्टी क कनिया हुनका नग एनाय सुक करी देनथी,आ नहुं नहुं रैहिनक खेनाय पिनाय के भाव हुनका रिन पुद्धने कनिया अपना माथ प बाथि नेनथी । आरै त खुनक बिस्तु सेहो एहेन ने हेते ,आध आध मिन क एक भ जाय छै ,नदी आ नार ,आन्हव आ नाठी ,डाँन आ बस्ती ,तहिना रैहिन आ कनिया,एक दोसबक जिराक सहावा रैनी गेन छनथी ।

ई कनापव अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।

‘सगव बाति दीप जवय क १५ म आयोजन ‘कथा कोसी डमेशी पासरानक संयोजकतरेमे ँबहामे सम्पन्न/ +० म सगव बाति दीप जवय सुपौर जिलाक



निर्मलीमे डमेशी मण्डनक संयोजकतरेमे बिपोष्ट पुनम मन्दन

सगव बाति दीप जवय क 79म आयोजन ‘कथा कोसी नामक रैनबक नीचाँ दिनांक 15 जून संध्या 6.30 रैजेसँ शुक भ२ 16 जूनक भिनसब 6 रैजे धरि लोकही थाना खन्तखात ँबहा गामक मध्य रिद्यालयक नर निर्मित भवनमे श्री डमेशी पासरानक संयोजकतरेमे गोष्ठी सम्पन्न भेल । अगिला +०म गोष्ठी सुपौर जिलाक निर्मलीमे हेरौक नेन डमेशी मण्डन प्रस्तार अएन जे सरिसन्मतिसँ मान्य भ२ घोषित भेल ।



श्री जगदीश प्रसाद मण्डल एर श्री वामचन्द्र पासरान जीक सहकृत
अध्यक्षतामे तथा श्री रीरेन्द्र कुमार यादव आ श्री दुर्गागान्ध मण्डलक सहकृत
संचालनमे ई कथा गोष्ठीक भवि बातिक यात्रा भेल । गोष्ठीक शुभावम्भ श्री
नक्ष्मी नारायण सिंह एर श्री वामचन्द्र पासरानजी सहकृत कपे दीप प्रज्वलित कऽ
उद्घाटन केननि ।

रिदेह-सदेह-5 रिदेह मैथिली रिहनि कथा, रिदेह सदेह-6 रिदेह मैथिली
नक्ष्मथा, रिदेह-सदेह-7 रिदेह मैथिली पद्य, रिदेह-सदेह-8 रिदेह मैथिली नाष्ट



उत्सव, बिदेह-सदेह-9 बिदेह मैथिली शिशु उत्सव तथा बिदेह-सदेह-10 बिदेह मैथिली प्ररंभ-निरंभ-समालोचना नामक पोथीक लोकार्पण स्थानीय रिद्वतजन श्री संजय कुमार सिंह, श्री रामचन्द्र पासवान, श्री मिथिलेश सिंह, श्री बाजुदेव मण्डल, श्री लक्ष्मी नारायण यादव तथा श्री रीरेन्द्र प्रसाद सिंह द्वारा भेल हाथे भेल ।

लोकार्पण सत्रक पछाति दु-शेर्दक एकठाँ महत्तरपूर्ण सत्रक सेहो आयोजन भेल जेगमे श्री रामचन्द्र पासवान, श्री रेंचन ठाकुर, श्री कपिलेश्वर बाउत, श्री कमलेश्वर झा, श्री बाजुदेव मण्डल, श्री राम रिलास साहू, श्री उमेश नारायण कर्ण, श्री रामानन्द झा 'बमण', श्री शंभु सौबत, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, डाँ शिरकुमार प्रसाद, हेम नारायण साहू, श्री अक्षय सौबत तथा श्री उमेश मण्डल तथा संयोजक श्री उमेश पासवान द्वारा 'सगव बाति दीप जवय' कथा गोष्ठीक दीर्घ यात्रा तथा उद्देशपत्र सभागावमे उपस्थित दुब-दुबसँ आबल कथाकार, समीक्षक-आलोचक एरँ स्थानीय साहित्य प्रेमीक मध्य मंचसँ अपन-अपन मनतरय बखतनि । जेगमे सगव बातिक 75म आयोजनक पश्चात 76म आयोजन जे श्री देवशेखर नरैन दिवलीमे करैरौक घोषणा तँ केने बहति झुदा से नै कवा साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कथा गोष्ठीकेँ गनि नेने बहति जहू गिनतीकेँ सोमवारौर गेल आ तँ ए ई गोष्ठीकेँ श्री उमेश पासवान अपन गमानक पवित्र दैत १६ म गोष्ठीक आयोजन केननि । ओ कहतनि जे हम सब अर्थात् बिदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनसँ जुड़ल मैथिली विकास प्रेमी छी । हम सब ११म, १२ म आयोजनक आयोजन कर्ताकेँ स्पष्ट कपे कहैत एतयनि जे झुदा हमबा सरहक रात नहिसेँ रिभावानी मानतनि आ नहिसेँ कमलेश्वर झा मानतनि । झुदा से हमझू नै मानरँ आ सही-सही गिनती कवरँ । आ तही दुआरे ई गोष्ठीक आयोजन १६मे आयोजन तँ भेल, आयोजित भेल । हनौकि दबलंगसँ आबल कथाकार श्री रीरेन्द्र कुमार नामक उकसेला पत्र बहूआसँ आबल श्री रिनय मोहन झा जगदीश, श्री दुधमोहन झा आ दबलंगसँ आबल श्री अशोक कुमार मेहता रीरेन्द्र नामक सर्ग गोष्ठीक आवम्बक घंटा भविक पछाति चलि जाग गेला ।

जीरिते नर्क (उमेश मण्डल), शिक्षाक महत (राम रिलास साहू), रिश्ताक पहिल गिवल (दुर्गानन्द मण्डल), रौका डाँड (लक्ष्मी दास), रँशि (कपिलेश्वर बाउत), ठाँठीक रँस (राम देव प्रसाद मण्डल 'नाकदार'), सगतोवनी (शिरकुमार मिश्र), पाख, पियकब, जोगाव आ अंश्रेज नैना (अमीत मिश्र), संत आकि चँठ (रेंचन ठाकुर), अछोपक छाप (शंभु सौबत), नमोनागष्टिस (उमेश नारायण कर्ण), द्वादशी (स्वभाव चन्द्र 'सिनेही'), बाँडि न (रोशिन कुमार 'मैथिल'), पँचरेदी (अशिलेश्वर कुमार मण्डल), झुगलो रिसैरनि (जगदीश प्रसाद मण्डल) अत्यादि महत्तरपूर्ण नघु कथा/रिहन कथाक पाठ भेल आ सत्रे-सत्र मौखिक छिपपणी आ समीक्षा भेल ।



अछोपक छाप (शिम्ल सौवभ) क समीक्षक क्रममे श्री बमानन्द ना "बमण" कथारतुसँ अपन असहमति देखैनि आ कहनि- " नै आरै ग गप नै अछि, एकठा गप एते देखियो, हम बमानन्द ना "बमण" त्रिद्वि उच करक, आ कतह आएन छी । उमेश पासवानक दवरज्जापव । " श्री रैचन ठाकुर श्री बमानन्द ना "बमण"क नर-ब्राह्मणरादी सोचक विरोध करैत कहनि- " लोकक मगजमे अथनो जाति-पाति भवत छै, मैलारंगक प्रकाश ना तै नै कह छथि जे रैचन ठाकुर भवि दिन तै केशि काष्ठैत बहै, ग बगमच की कवत । । श्रीधरमकेँ सेहो ग गप बुझत छनि । माने मैथिली साहित्यक, समीक्षक आ बगमचसँ जुड़न ब्राह्मणरादी आ नर-ब्राह्मणरादी सोचक लोककेँ देखैत ग कहन जा सकैए । २. मे शितालीमे श्री बमानन्द ना "बमण"क रयान ग देखैत अछि जे कोना ओ उमेश पासवानक दवरज्जापव आरि उपद्रुत कवरक भारनासँ त्रसित छथि ।

ई अरसव पव २१ म बिदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी सेहो आयोजित भेल । अगिला ०५ गोष्ठी स्वपोत जिलाक निर्मलीमे हेलक जेन उमेश मण्डन प्रस्तार आएन जे सरिसन्धिसँ मान्य भऽ घोषित भेल ।

ई कनापव अपन मत ggaj_endr_a@videha.com पव पठाउ ।



रिन्दरिब ठाकुर

रिहनि कथा

१

न्याय

सुन जागत कान एकठा नडकीकेँ ओह गामक अथियाक रैथि अपना हरसक शिकाव रना जेनक । ग घटना सुनलक रौद सुनिया छै । सब ओकरा रड पिठनके । ई घटनासँ हुनकव रौरुजीकेँ अपन पगरी खसराक भान भेलै आ अपन रैथि कवतुतपव पर्दा देरक जेन पछायत नै कवरक घोषणा केनक । अथियाक एहन पक्षपात देखि पुवा समाज मित्रि कऽ एक निर्णय केनक जे न्याय आथिब न्याय नोए छै । आ सबक साथ उचित न्याय हएर आरथक छै, चाहे ओ बाजा हथै या प्रजा । तै पछायत हेलक चाली तथा दोषीकेँ कर्म अनुसार उचित सजाय भेलैक चाली । समाजक आगु अथियाक कोनो रस नै चनलै । ओ पछायत कवरक जेन रिशे भऽ गेल । दोसव



दिन भोरे पञ्चायत रैसन आ उचित न्याय भेल ।

२

आमेग्लानि

कान्हि दिराती पारनि । सब गोष्टे दिरातीक तैयारीमे जुष्टन । हबीयाक हाथ कष्टा गेल छै तै हुनकब पनी आरथक समान जेल रैजाव दिस छैहन । पाछ-पाछ हुनकब रैष्टा सेहो । हबीयाक परिवार रैड गबीर छै । दुकानमे पुजा, आवती आ प्रसादी लेरौक क्षमता नै छनि हुनका सब नग । झुदा समाजमे नाक रैचेरौक हेतु एकष्टा अगबरौती, अरीब, चन्दन आ पातवि नहु खविदक झुशिकनस । तअपब स हुनकब रैचरौ हुकानोती आ हलका जेल रैहाडि तोड्न नागन । पैसा त नै बहए ओकरा नग से नष्ट द किन देते । दुकनदाबस रिनती केवक तै ओ कहक - " पैछता नक्ष्मीपुजाक पैसा सब राकिछ छै आ हेब कतेक खानी उधावि दैत बहियो । " दुकनदाबक रात सुनि कइ छपवारोती तै नजेनी जकाँ नाजसँ घोकेछ गेल । ओम्ब दोसब लोक सबकेँ सामाग्री किननाग आ रौत-रैचा जेल हलका किननाग देखि कइ छपवारोतीक आँखिसँ श्रिन नोब रैहइ नगले आ अपन गबीरीपब रैड आमेग्लानी भेलै ।

३

अभिगीप

चौकिअपब सँ काकी कह छथिन, "रौरा एम्हरे आड । "

काकीक पिड एत सुब सुनि बमलोचना चौकी दिस रैहन झुदा आर्शन सुन । चाक दिस रैस कलारोहछै । ओ समयि नै परनथि ई परिवेशिके । आ काकी सहजेसँ रैतारै जेल बाजी नै होथिन । । तखन ओ कहथिन- "काकी, की भेल सब-सब रैतारै, अहाँकेँ हमब सपत भेल । "

काकी आँचसँ अपन नोब पोष्टेत सम्वदनशील भइ रैजनि- "की कइ रौरा, अनर्थ भइ गेलै । रैचिके रिराहक ओ महिना नै भेल छलै झुदा नवपिशीछ सब उनका डुपब अग्याय कइ देनके । दहेजक किछ छैका रौकी बहि गेल छलै, से तअसँ ओकरा मष्टी-तेन धइ जिन्द जवा देनके ओकरा साम्ब सब । कतेको रैब ई छैका जेल तडाड-मडाड भेल बह झुदा हम सब जन्दिअ रैरैस्था कइ दइ देर, से आश्रिसन देनाक रैरैजुदो ओ दानर सब हमबा रैष्टीक साथ एहन कर्म केवक । रैजबखसुरा पुनिसकेँ थानामे विपोष्ट निथारै गेलौ तै मचकरा ओकरा सबकेँ शायद पैसेपब मिला जेलके । एखन धरि किछ निवाकवण नै भेलै । " काकी रैजते-रैजते रैहोस भइ गेलीह ।

बमलोचना काकीकेँ सम्वारेत सोछै छै, समाजक एहन अभिगीप आ कर्मकावक रौरेमे । जकबा चपेष्टामे कतेको धिया-रैसेनी रैनिदान होग छै ।



ई बचनापब अपन मंतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



जगदीश प्रसाद मण्डल

वयुक्ता-

छप्पा पाव

गोसाँग ब्रक-मुका गेल । ओना छह रँजि गेल झुदा सुकज अपन दिनक यात्राक अंतिम पड़ारपब अँष्टिक तकिते दुना । पतवाएल काज बहने नीरकँठ काका सरैरे-सकार निचन भ२ गेल दुना । जहिना परिवार मोठेनासँ काजो मेष्टाँग छै आ दूरबेनासँ काजो दूरबाँग छै तहिना नीरकँठ कक्काकेँ सेहो भेलनि । ओना परिवारक सँकाव आगु रँठनि झुदा काज पुबने काजो पतवाँग । होगतो तँ तहिना ने छै जे जनम होगते सँकारोक जनम होग छै आ अन्त होगत अन्ता होग छै । नीरकँठ कक्काकेँ तेहने सन भेलनि । किथए ने हेतनि, सोमहे लग्गीसँ घास खुँनासँ ने ने होग छै जे आगु तकर ददा-पवददा देखरँ आ पाछु तकर तँ नाति-छेड़नाति देखरँ । रौर-रँचाक रिखाह-दान भेने माए-रौपक जिनगीक प्रकथ कर्म-धर्मक पूर्ति होग छै जेसँ रौर-रँचाक अपन दायित्व पूर्ति करै छथि । रैँठा रिखाहक आग पनबहम दिन छेलनि । पैघ यत्तसँ दूनु पवानी झुजि पारि जहिना सारुँनसँ रसक मैल साह कएल जाँगए तहिना माए-रौपसँ त२ क२ रैँठा-रैँठिक परिवार रँना जिनगी मैलकेँ कर्मक सारुँनसँ घोष अपन मनक सहाँग लोक करै छथि । नीरकँठ कक्काक मनमे उठनि जे रैँठा-रिखाहक अंतिम हिसार जोड़ि किथए ने काजक रिसर्जन कए नी । आरँ कि कोनो ओ जुग-जमाना बहर जे तीन-तीन-चाबि-चाबि मास गवदनिमे उतबी मुनिते बहर । जे काज महज चाबि-पाँच घण्टाक छी । मन गराही देलनि जे से ने तँ आग अंतिम हिसार -रिखाहक नाभ-हानिक- क२ काजक रिसर्जन कएल नै । जहिना रौनेया हबिषक रँछा पकड़ १गते चाककात चौकला ह्थए नगैत तहिना नीरकँठ कक्काकेँ भेलनि । काजसँ रिश्या होगते देखि स्रुचिता काकी हाँग-हाँग अपन काजक झुड़ १ मोड़ि चाहक ओबियानक रिचाव मनमे अननि । किथए ने अनती, ओहन जमाना थोड़ छथि जे पतिक रिकनात देखि ओसँ रैँसी अपने रिकनातता देखरँ नगती ।



केतली-लौठा नेने कर दिस रैठनी, मनमे उठनि पहिने अपने हाँ-हाँ एव धोए
 लौठा-केतली अथाड़रँ अकि लौठे केठनी अथाड़रँ पानि भवि नैरँ । मन ततमत
 करए नगनि, ओना ई उमेवक ए प्रश्न नै भेल, झुदा हव-काजक अपन गति-रिधि
 छै । अपने जिनगीक काज नै दोसवारै रैष्ट देखौत । समैसँ पहिने अचिता ककी
 चाह रँना दहिना हाथे गिरास नेने नीरकँठ काका नग पहुँचनी । अथनि धवि नीरकँठ
 काका झुड १ निछ झुहँ केने छुना । मनमे रैष्ट रिखाहक काज घुबिगत बहनि ।
 चाहक गिरास अथनि अचिता ककी निछ दरँ रैठ नीरकनि तथनि अँथि पडि ते काका
 नजवि उठौनि । भ्रुखाएन झँहक अरुथी देखि नजवि-पर-नजवि गडौनि । झुदा
 कक्काक मन अपन रिचावपर बहनि । काकीकेँ रूमि पडनि जे भविसक कोनो दरँ
 कएन काज मनकेँ पकड़ने छन्हि । झुदा जँ चाह पीरैसँ पहिने रौजि रौत नाडरँ तँ
 भँ सकेँ जे चाह पीरँ छोडि अपने रैथामँ रैथित भँ जाथि, तँसँ नीक जे
 चुपचाप हाथमे चाहक गिरास पकड़ १, अपना चाह अँगनासँ अनि एते पीरौ करँ अ
 प्रुडियो नैरँ । तँ रौच दु-चावि छेँष्ट चाहो छेँष्टि नेने बहता जँसँ मनोक
 जूआरि कमतनि । ओना उदासो चेहवाक केते कावणो अछि । केतो रौद-रँसातक
 उदासी तँ केतो कोनो काज नै भेल, केतो परिश्रमक नोकसानक उदासी, केतो
 धीया-प्रता झुगने उदासी तँ केतो माए-रौप झुगने । झुदा तँ कि पतिक रैथा पनी
 नै अरुथि । पति-पनीक रौच हजारा कप अछि हजारा वंग अछि तँ कि रँजा-भुकी
 रँन भँ जँ । अँगन दिस अचिता ककी रैठनी । एक छेँष्ट चाह पीरिते नीरकँठ
 कक्काक झँह झुसिकिअनि । मनमे उचवनि, कछु जे एहेन काजकेँ कि कहँ काज
 छेवनि डेठ सँ जोड़ धोती अ तैकर अरौ सँगि सभ माने पाँचो धूक कपड़ १ सँग
 रिदाग करँ । ओना डेठ सँ रँहूत भेल झुदा से नै, अज-गज रँना परिवार
 कक्काक । चावि भाँगक अपन भैयाबी, तैकर नैहव-सासुर, नाति-नातिक, पोता-
 पोतीसँ वँ कँ अपन सासुरक सातो सरँधीक, तँ सँग रैष्टक हागसकुर-कोलेजक
 सँगिक सँग नोकबीक सँगि धवि । नीरकँठ काका छदए थोदि काज केवनि । प्रश्न तँ
 मनमे उठनि झुदा नगने जरँरँ भैठनि जे जग-जापमे अँ होगते छै । जँ से
 नै होए तँ धनक काजे कि बहत । पेष्ट तँ सागो अ एक लौठा पानियोसँ मानियेँ
 जाग छै । मन नचिते बहनि अकि अचिता ककी झँहमे चाहक गिरास भिरौने अगुमे
 रैसनी । तँ रौच नीरकँठ काका अपन हाथक गिरास चोकीपर बाथि हाथक पाँचो
 उँगवी घुमँरैत रँजना-

“ कह ते ए केहेन भेल ? ”

नीरकँठ कक्काक प्रश्न अनि अचिता ककी अकचागते बहनी जे कि केहेन भेल । राँघ
 भेल कि साँप भेल से केना रूमरँ । ओना दुनु परानीक -नीरकँठ काका अ अचिता
 ककी- मन रैष्ट रिखाहसँ एते खुँ बहनि जे छेँष्ट-छीन केते रौतो अ काजो मनसँ
 हँष्टि गेल बहनि झुदा मनोक तँ अपन सँसार छै । प्रसंगोक अपन स्थानो अ महता



हुगहे । दूनु रैकतीक समयया काज तँए थारो रैसी मन खुशी बहनि । खुशी हएर
 उचितो हुन किएक तँ केतो एहनो होग छै जे प्रेमबस पीर, मधुव गीत गारि सतान
 पैदा होग छै आ किछुए दिन पछाति सब किछु उनै जग छै, ओग रैषीसँ तँ नीक
 काज भेले बहनि । ओना चाबि भाए-रहिनक रीच एकेठो रैषी तीनै रैषी छैननि ।
 जे तीन रैषी-रैषीसँ जेठे छैननि जेकर रिखाह-दुवागमन पहिने क२ नेने छला ।
 तीन रैषी रिखाहक दान-दहेज देखि दान-दहेजसँ मने उचै गेननि, जगसँ रैषीक
 प्रति दान-दहेजक रिचारे मनमे दुरि गेननि । दोसरो काबु भेलनि, एक-एक रैषीक
 रिखाहमे जेते खर्च भेल तगसँ रैसी जँ रैषीरनारै खर्च कबएरँ ए तँ सोमना-
 सोमनी खयाल भेल । झुदा से कहाँ होग छै, दहेजक दुखारे रैषी रिखाहकेँ लोक
 खगव-मगव करैत छै जगए झुदा रैषी रैबमे रिनु पछनो-निखनकेँ डाकैब-
 गंजनिब रँना देल जगए । जहिना रँददहठामे हुसि-हामिक तेजी बह छै तहिना
 ने रैषी-रैषीक रिखाहमे... । यत्र सन परिव स्रमे जँ हुसि-हामिक तेजी ने बहत
 तँ ओ यत्र शुद्ध केना भेल ? खैब जे होग । जेते तीन रैषीक रिखाहमे खर्च
 भेल ओते आमद एकठामे केना हएत । तगसँ नीक जे झुहछोहनिसेँ ने कवर ।
 हथुठाग जे हेतग सह हेते । पतिक रिपछी रानि -हाथक गुगरी घुमा रँजेत-
 देखि स्रिता काकीकेँ हँसी नगननि झुदा हँसरो तँ हँसरो छी । केतो गदगदरै तँ
 केतो भकभकरै करै । काज नहगव बहन घंष्टा नह रँमाए छै आ घंष्टगव बहन
 तँ नहो घंष्ट रँमाए छै । पछा एन केवाडक बुज्जा जकाँ स्रिता काकीक दाँत तब
 नीककँ कक्काक आकाशि पड़ननि । झुदा आकाशो तँ आकाशो छी, कथीक आकाशि । तँ
 जारै उधावि-उधावि ने रँजता तारै रँमर केना ? झुदा झुहक हँसी पेठमे गवकनियाँ
 कँठे बहनि । रँजनी-

“तेहेन माँपि-तोपि रँजे छी जे उपर-घाँड़ो बहि गेलो तँ कनी रिक्छा क२
 रँजिओ । जखनि दूनु गोठेक समयया जीरन अछि तखनि हम हँसी आ अहाँ कानी ए
 केहेन हएत ? ”

थिम्सकबकेँ जहिना एकाठो थिम्सा स्रनिहाव भेठना पछाति अपन स्रि-रँपि हवा जाए
 छै तहिना नीककँ कक्काकेँ स्रिताक रौन स्रि भेलनि रँजनी-

“ परिवारक महान यत्र रैषी-रैषीक रिखाह छी, तेहेन यत्र जँ नीक जकाँ सम्पन भ२
 जाए तँ खुशीक रात भेल । तगले देहेक धौजनि आ पागयोक धौजनि तँ हेरै
 कबत । झुदा तगमे उचित-अनुचितक तँ रिचार कबए पड़त किने ? ”

नीककँ कक्काक मनकेँ पकड़त छुष्टा स्रिता काकी भिड़ौनि । हुँकारी भरैत
 रँजनी-

“ ईमे के ने कबत ? ”



जहिना एक्क भगरान भिन्न-भिन्न स्वरूप भिन्न-भिन्न फूल-पत्री पारिं खुशी होगछ तहिना नीरकंठ कक्काकेँ सेहो भेलनि । अचिता काकी नजबि-पब-नजबि गढ़ १ रँजना-

“ उचित-अनचित रैड़ १एरँ खसान खड्डि । जिनगीक सर्गी बहने कि हएत ? ॥ तँ रिचावक सर्गी भेने ने काज चरत । ”

नीरकंठ कक्काक रात अचिता काकीकेँ अकठागन लगनि । मनमे उठनि जे कछु सब दिन एकठाम बहि सब किछु करै छी तथनि एना किछु रँजे छथि । भबिसक कोनो एहेन उकड़ू सोग ने तँ मनकेँ पकड़ि नेने छन्हि । खान दिन केहेन रँढ़ि याँ हरँगरँ करै छेलौं आ आग कि भइ गेल छन्हि । रँजनी-

“ कनी नीक जकाँ अपन उदासीक कावण रँजिओ । हम उपर-मापर बहि गेल छी । ”

अचिता काकी जित्तासा देखि नीरकंठ काका रँजना-

“ उचित-अनचित काजक दु छोब भेल । एक छोब उचित भेल आ दोसब अनचित । झुदा तगसँ थोड़े काज चरत । अत-अत मिति जहिना डोबी रँनेए तहिना दुनु खड्डि । तेकवा रँहिया कइ जँ ने सीमा देरँ तँ काजे भँसिया जाएत । बूमरँ ने कबरँ जे कतए कि भइ गेल । पछाति रँजरी जे मनमे जे छेली से भेरँ ने कएन । खनी कछु जे मनेक रिचावकेँ ने काज कप रँना केनिँ तथनि किछु ने भेल ? ”

नीरकंठ कक्काक रिचाव अचितो काकीकेँ दमगब बूमि पड़नि । माथ रुढ़ि यरँेत रँजनी-

“ तथनि केना हएत ? ”

अचिता काकीक पघिलन मन देखि नीरकंठ काका रँजना-

“ रँड़ भावी जान छै । फूलरावीक फूलमे देखरँ जे एके नामक अपवाजित फूल उजरो होगए नानो होगए आ काबीओ होगए । सोनमे अपवाजित आकि आने फूल जे बंग-बंगक होगए, कहनासँ थोड़े बूमि पेरँ जे नान-काबीमे कोन-नीक कोन-अपना भेल ? ”

नीरकंठ कक्काक छिड़ि याएन रिचाव अनि अचिता काकी समठेत रँजनी-

“ अछा छोड़ू एते छान-पगहाकेँ । एक-एक काजकेँ उठा रँड़रँेत चनु जे कि नीक-भेल आकि अपना भेल । ”



पनीक रिचाव सुनि नीरकंठ काका रंजना-

“हैं, रंड़रंठा याँ रिचाव देनौं। झुदा पहिने ३ कहि दिख जे केते काज अठनौ पछाति करै छी आ केते अपने झुड़ने करै छी ? ”

पतिक रात सुनि सुचिता काकी अकरका गेली। मने-मने रिचारै लगली जे ३ कि भेल ? एकबा कि काज करै नै कहलै। घब-पबिरावक जखनि काज भगए गेल तखनि काज केना नै भेल। भबिसक बुधिये तँ नै घुसुकि गेलनि अछि, नै तँ एहेन रिनु हाथ-पएवक रौर किअए भेलनि ? अक्कठा रातमे सेहो मानरँ उचित नै हएत। जँ मन घुसकन-हुसकन हेतनि तँ दोसरौ-तेसरौ रात एहेन रंजता। ओना लोककेँ रौरौ-रिपति आ काजो-उदममे मन घुसुकि-हुसुकि जाग छै। आशिक कपमे की ३ मुठ जे किछु सबकारी कर्मचारी रा शिक्षाकोकेँ रौरौक रिखाह सेहो पतित रँनौनकनि। पबिसुतिबो बहर जे केते शिक्षक हाग स्कूल रा कौनैजसँ सेरा-निबृत भ२ गेलौ झुदा हाथसँ कहियो रेतन नै उठौननि। झुदा तँ कि पबिरावमे खर्च नै छेलनि, एक शिक्षक रा कर्मचारीक खर्च तँ छेलनिहै। मनकेँ खीब करैत सुचिता काकी रिचावनि जे से नै तँ जे बुनैमे नै आएन से प्रुद्धि किअए नै नी रंजनी-

“ कि कहनिअँ अठनौतब आ अपने झुड़ने ? ”

सुचिता काकीक प्रग्न सुनि नीरकंठ कक्काक मनमे उपकननि, भवि दिनक हवाएन जँ साँनो घड़ा घब पछ जाए तँ ओ हवाएरँ नै भेल। दिन तँ होगते छै रौरौआगने तखनि रौरौआएरँ हवाएरँ केना भेल। रंजना-

“ जखनि कोनो काज अठनौ पछाति जे करैए ओ अपने उहिक नै भेल। जँ ओकबा अठ एन नै जाए तखनि ओ कबत कि ? अही कछ ? ”

नीरकंठ कक्काक रिचाव सुनि माथक मोछा पछैकेत सुचिता काकी रंजनी-

“ अहाँ अपनाकेँ एतरे किअए बुनै छिअ जे हमबा कोनो काज करैने नै कहरँ। जँ से नै कहरँ तँ केना बुनरँ जे हमब रात हंग्ली मानैए आकि नै ? ”

पाशा पनछैत नीरकंठ कक्काक रंजना-

“ जड़ा सँ छीप धबिक काजक हिसार-कितार करैमे रंड़ समए लगत। से नै तँ अक्कठा काजक हिसार करू। ”

अकठा सुनि सुचिता काकीक मन हलचलननि। ३ तँ सोनहली एक तबहा भेल गुंगता क२ रंजनी-



“अछूँक रात बहन आ एकठाँ हमरो अछि ।”

“से की ?”

“सराबी रबियातीक हिसारसँ होग छै तगमे एते गाड़ ीक कोन प्रयोजन छैनै, जे नह गेलौ ?”

स्वचिता ककीक प्रश्न सुनि नीलकंठ काका रँजनी-

“अछा, अही रिचाव दिख जे पहिने कि रिचावै ?”

पतिक शीतर छारवि पारि काकी रँजनी-

“पहिने गाड़ ीए-सराबीक रिचाव कक । किअ पचीसठाँ गाड़ ी नह गेलिअँ, जखनि कि डेबहे सभ रबियाती गेलिअँ ।”

गाड़ ीक नाँ सुनि समाजमे जीतक अनुभर नीलकंठ कक्काकेँ भेलनि । अखनि धरि समाजमे कियो रीसठाँ गाड़ ीसँ आगु नै रँठन छना तैठाम पाँच गाड़ ी रँठ'क प्रतिष्ठा केकवा भेलैन । आह्लादित होगत रँजनी-

“अपन मनोबथ छन जे आगु रँठ' काज कबी । किअ अहाँकेँ कोनो तेकब दुख अछि ? प्रतिष्ठा कि हूँठा कह भेल आकि सम्मिलिते भेल ।”

एक तँ ओहिना स्वचिता ककीक मन रँठ' रिखाहक खुशीसँ उषियागत बहनि तैपब पतिक मनोबथ सुनि आरो उषिया गेलनि । रँजनी-

“अनकासँ तँ नीक काज जकब भेल । देखै छिअँ जे अकुआक रौवा जकाँ मनुख गाड़ ीमे ठसमठस रबियाती जाग-अरैए आ गाड़ ीमे झूँह पेँठ सभ चनए नगै छै । तगसँ नीक भेल जे जे कियो गेना अबामसँ एना-गेना ।”

स्वचिता ककीक रौन सुनि नीलकंठ कक्काक झूँहसँ हँसी हुँठ'नि । पतिक हँसी देखि काकीकेँ भेलनि जे भविसक हमर निशान उचित जगहपर लगनि । अपन रँवाग सुनि खुशी हएँ मनुखक जगजगत सँकाब बहन अछि । अपन उचित जगहक निशानसँ पतिक झूँहकेँ नाराँ जकाँ हँसाएँ सहन पनीक प्रह्वथ नम्रण तँ भेलै कएन । झूँदा नीलकंठ कक्काक हँसीक कावण स्वचिता ककीक निशान नै रँकि समाजमे अबामदेह रैसी गाड़ ीकेँ रँठ'क रिखाहक रबियातीमे नह जाएँ छैननि । जेकवा रँठ'केँ अधिक दान-दहेज रिखाहमे भेलै छै, समाजमे ओकरे मान भेल कि ने ? जँ मान रँठ' तँ जकब अँको रँठ'न हेरै कबत । पेँठक ग्वदग्वदी असखिब होगते स्वचिता ककी रँजनी-



“आर, हाँ-हाँ ही-ही छोड़ू । भानसोक रैब भेल जागए । अथनि प्रतोहूँ छलिक
भाव थोड़े देरै । जग रैथे रैथाएन छी से रैथा निकानू । जारै ग्व घाड जका
कोनो रैथारै नीक जकाँ नै निकारि रैहा जेर तारै सड़नि-असागक डब बहिले छै ।
तँए आदो-पात्रु राजू ? ”

जहिना कियो सगीतक उच कोष्टक मचपब करारै श्रोतारै झुगद कइ सुता दगए तँ
केतौ एकाग्र रैनमे असकरे कियो अपन ग्वारै निवाकाब कप भगरानकै सन भवत
जकाँ नन्दी गाम रैना बाज-काज चररैए तहिना अपन रैथित राषकै निकालैत नीरकठ
काका रैजना-

“रिखारक आन खरच आ काजपब मन केतौ नै अँकन अछि, किअए तँ चाडब-दारि
खरि भेल तँ रैदनामे लोको, मालो-जान आ चिड़-उं खेतक । गाड़-सराबीमे खरि
भेल तँ गहो उपवाग नै भेलै जे किनको डाकठब अँठाम जाए पड़नि । झुदा डेठ
सए जोड़ धोती मिला पाँचो दूक रिदागमे जे खरि भेल ओ ठावनो मनस नै
हँसैए । ”

जहिना मकभूमिमे राँव सिँरा चमकैत किछ नै नजबि अरैत तहिना अचिता काकीकै
रैथै रिखारक सफलता मनमे डेलनिहँ चमकि चड़चड़ेली-

“बाँड़ कानए अहिराती कानए तग वगत रँडरुम्बि कानए, सुहबदे झुँहँ किअए नै रँजै
छी जे आने रैबक राँप जकाँ कननी रैमावी धेने अछि तँए कनै छी । अपने मन जे
केतरो ग्व-चाडब चिररैत कानर तँ कि हमही सगी छी, राँष्ट्र थोड़े जेर । खेब जे
होड़, देह तँ रोगाएन अहीक अछि, तँए रैमावीक जड़ा तँ अपने बुनैत हँसै ।
राँजू, थोनि कइ राँजू, कनि भानसमे देवीए छत तँ कि हेते । मनक घाड जे
मेथैएन बहत तँ आगओ आ सुतेओमे कचि ओत । ”

अचिता काकीक रिचार सुनि नीरकठ कक्काक मनमे भेलनि जे भविसक लोक ठीके कँ
छै बाजारकै किदिनि चिन्ता आ वानीकै किदनिक । झुदा मनक रैथा नीक जकाँ रएह नै
बुनि पारि सकैए जेकर हाथ-पएब नमहब हेते । घँको सरहक अजीर गति छै ।
रैब-कनियाँक घबदेथीमे वगले सँफिकेष्ट दइ दग छथि जे सीता-बामक जोड़-
अछि । रिधातो जेना जोड़ने वगा पठौनि । झुदा नै सोलहली तँ अँठलीओ रैथा तँ
भगरै कबत । सोलहली तँ तथनि भँगे छै जथनि सुनिनिहाव रैथा सुनि रैरसथित
दंगसँ समाधान करै छथि, झुदा तँए कि अपन रैथा छुदैसँ निकारलोसँ तँ अदहा कमिते
अछि । किअक नै कमत ? लोक नै सुनत तँ नै सुनह झुदा उगवाहा तँ सुनरै
कबत । रैजना-

“रिदागमे केते खरि भेल से बुनत अछि ? ”



ठोरेपव रबी पकरैत सूचिता काकी रजनी-

“रिदाग तँ रिदाग भेल, तगमे हमरा बुनैक कि प्रयोजन छि । अ काज तँ प्रकथ पावक छी । जे घरसँ निकलि कहुँम-पविराव धरि चीन-पहचीन बयै छथि, सेहो अथना कि भेल । जखनि अथने नै भेल तखनि चिह्न किथए हएत ? जखनि चिह्न नै हएत तखनि मने किथए रैथएत ? मन हलुक कक । अनेरे तरे-तरे गमसङ्ग छी ।”

नीलकंठ कक्काक मन मानि गेलनि जे झूठछोहनि छोड़ा किछ नै भेटैत । झूदा मनक रैथोक कथा जँ राजियो नै जेरै तँ ओकरा संग अन्त्या हएत । रजनी-

“जे रात सुनेमे नै आरै ओ दोहवा कऽ पुछि जेरै । झूदा जे बुनैमे नै आरै ओहन नै दोहवाएरै । शुकहसँ कह छी ।”

अपन भविष्यगत आसन देखि सूचिता काकी हाथ-पव सोम-साम करैत रैसरी । सोम-सामक कावण बहनि जे नजबि-नजबिक मित्रानी नरैरै डिग्रीमे नै शित-प्रतिशित हूथ । रजनी-

“देखु हम रिसबाह छी, जँ रीचमे कोनो रिसवि जाग तँ ओकर मदी नै भेल । झूदा अछू, काज केतौ आ रात केतौसँ नै कवरै । जहिना-जहिना काज रैठौत गेल तहिना-तहिना रातो रैठौत चरै ।”

सूचिता काकीक रिचाव नीलकंठ कक्काकेँ दमगव बुनि पड़नि । दमगरे रिचाव नै दमगव आशी जगारै । रजनी-

“डेढ सए गोठैकेँ रिदाग केनियनि । ओना किनको ई दुखारे नै रैरेनियनि जे एक काजक एके रिदाग उचित बुनौ । झूदा तँ कि, किनको संग कम-रैसी नहियै केनियनि ।”

पतिक रात सुनि सूचिता काकी ठपकनी-

“किथए, कियो किछ उपवाग पठौनि छि ?”

“उपवाग किथए कियो पठैत । झूदा मन मानि नै बहल छि । कहिये दग छी । डेबहो सए रिदाग डेढ लाखक छल । एक-एक रिदागक रसुमे एक-एक हजार लगल छल । झूदा आरै जखनि पाछु उनै तँ बुनि पड़ै जे दस-सँ-पनबह गोठै धोतीओ चदबियोक उपयोग कबता रैकी कियो घबनीपा रैनीता तँ कियो गाड़ि-पोछना ।”



पतिक रात सुनिते सुचिता काकी कदैक रँजनी-

“अपन महिँसकेँ कियो ब्रह्मविष नाथत तगले अहाँकेँ चित्रा किथए होगए ।”

सुचिता काकीक रात सुनिते नीलकंठ कक्काकेँ मड़क उठनि रँजना-

“अही सन लोक रिंखाहमे काजसँ रिषि भारी रँनरैए । एकठा कछ जे अपन रिंखाह मन अछि ।”

“मन किथए ने बहत ?”

“केते खर्च राप केने बहथि से बुझन अछि ?”

“दहेलहा-भसेलहा खनदान बुनै छिँ जे काजक हिसार राप-माएसँ जेर ।

“एना ने छिँछि आउ सरा नाथ कपेँखामे दनु गोठेक रिंखाह भेल बह । जाउ कनी चसगवसँ भानस कवर । अहिना रँजए नीक होगत एलेए ।

ई कनापव अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



जगदानन्द या 'मन्न' - रिहनि कथा
ग्राम पोस्ट - हविप्रव डीहठेल, मधुबनी

१. हावि

साँसु पहव फोनक घंटी रँजल । “प्रिन न न प्रिन न न न प्रिन न न न न ...”
रिना अप्पन नाम रँतोने बिसरव उठैतहुँ । कोनो जरार नहि । दोसब कातसँ
शित ।

झुंझिकसँ पन्द्रह मिनट बाद फेब फोनक घंटी रँजल । दोसब दिससँ फेरो कोनो
आराज नहि । शागद हमब सुब पर्शद नहि हेते अथरा कएकरो आठवसँ गप्प करैक
हेते ।

बातिक एगावह रँजे फेब फोन आएल, फोन उठैतहुँ, “हेनो ।”

कनिक कातक चुप्पीकेँ बाद उम्बरसँ, “हम मातकी रँजे छी, रँहुत दिनक बाद फोन
कए बहल छी, ठीक तँ छी ने ? साँसेसँ प्रीति कए बहल छैतहुँ झुंझा हिम्यत नहि
भए बहल छल । ए कह जेल एतेक बाति कए फोन केतहुँ जे हमब रँहा भए गेल



। ~
 ~ हमबा बूमन अछि । ~
 ~ कोना । ~
 ~ दूरङ्गसँ एना रौद हम अहाँक गाम गेल बही ओहिठाम कएकरोसँ बूमनहू जे दु
 महिना पहिने अहाँक रौद द्वागमन दूनु संगे भ२ गेल झुदा ङा की महब अंतजाव
 नहि कए पएनहू । ~
 ~ हम रेरैस बहीअहाँक रँचार्के पाँच महिनासँ अपना पेष्टमे बखने-बखने,
 आगु दुनियाँक नजबिसँ रँचेनाए असमुरँ छन । ~
 ~ हम कहि कए तँ गेल बहि जे छह महिनासँ पहिने पहिने आरि जाएँ कि हमबापब
 रिश्नास नहि बहन । ~
 ~ एहन गप्प नहि छै, हमब तन एहिठाम अछि झुदा मोन एहनो अही नग अछि पबथ
 ङा
 समाज, गाम आ परिवारक सामने हम ठाबि गेलहू । ~
 ~ की अहाँक पतिकेँ ङा गप्प सब बूमन छनि । ~
 ~ हाँ । अहाँक द२ नहि झुदा रँचा द२ बूमन छनि । ओ देरतुना लोक छथि, होए
 रँचा हमब रँचार्के सेहो अप्पन नाम दै नेन तैयार छथि) ...कनिकार दूनु
 कातसँ चूप्पीकेँ रौद (हम एखन एहि द्वारे होन कएनहू जे हमबा आरि ताँकेक रा
 होन करैक चेष्टा नहि कबरँ ओहि सभकेँ रितन गप्प जानि रिसबि जाएँ...हूँ२२
 हूँ२२२ । ~ कानेक सब संगे बिसीरब बाथेक थष्टथष्टाहष्ट, होन रँद ।

२ .डिरिया

~ गे दाए अहाँक सभक धिया-पुता कतेक गोब होए ? बाति कए डिरिया रौगब
 कए
 स्रते जाए छीयै की ? हमब मबदारी तँ डिरिया बूता दै छै । ~

३ .पिथाम

~ की यौ नननजी एना ईरुब ईरुब की तकेँ छी ? ~
 अप्पन गामक झूतनागर भाँजक झूतसँ ङा अनि ननन एकदमसँ सकपका गेला, जिनका
 कि रँहृत कारसँ घुबि बहन छन ।
 ~ नहि किछु नहि । ~
 ~ धुब जाँड । अनाव नग पिथामन जाए छै की पिथामन नग अनाव । अहाँ एहन
 पहिन मबद



छी जकवा लग अनाव चलि कए एतौए आ एना ईकब ईकब तकने कोनो पिछास मिमाग छैक
का ? पिछास मिमारैक लेल अनावमे कुदए परैक छै ।”

४. प्रेम दीरानी

“खरे । खरे । बक ग का भइ बहर छै । तू सब एक संगे एतेक बास
सामुहिक आयेदाह ।”

“हम सब प्रेम दीरानी, प्रेमकेँ अंतिम छेब पाबै लेल जा बहर छी झुदा अहाँ
अपसार्थी मनुख एहि प्रेमकेँ नहि बुझबै अहाँ सब तँ प्रेमोमे नहा नुकीन
तकै छी ।”

डिरियाक लोहपव भलागत फतिनाक नुल्लमे सँ एकठ्ठा धीरेसँ हमर कानमे भनभना
कए कहि डिरियाक आँचपव जा जवि गेल ।

५. आपवि पिपा कए

“यै छोटकी कनियाँ, सुने छीयै तलितक रब एतखीन्ह जाड हुनकासँ कनीक नीक
झूठे हँसि राजि नियोन, खुशी भए जेत तँ ठीकरी सेनब लेल किछ दएओ कए
जेटा ।”

“एहन हँसि रँजे रँगा आ खुशी हेमरँगा मबदारौकेँ हम आपवि पिपा कए चैन नहि होबि
देरैन, अपन जमएक रँड टिंता छनि तँ अपने जा कए किएक नहि खुशी कइ ले छथि
।”

ए कनापव अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।



अथिलेश कुमार मण्डल

रैबमा, मधुरनी ।

बिहनि कथा-



पँचरेदी

जेकबा जेन चोबि करै सएह कहै चोबा, भोरेसँ मनमे रैब-रैब उठै नगर ।
केतरो ठेन क२ रैहँसँ चोरी से रैहँसँ ने कब । तथनि मन भेन जे जहिना
केकरो दुखनामा सुनने दुख कमे छै तहिना जँ समाजोक रातकेँ सुनि आ अपनो रात
कहिँ । उठै क२ नातकाका नग गेलो । देखते प्रह्वनि- “रौखा मन रैड मुकन
देखे छिख ?”

कहनि- “काका, तेहने बगड । मनकेँ बगडि बहन छि जे कि कहो । तँ
मुकोने छी ।”

नातकाका प्रह्वनि- “से कि ?”

कहनि- “काका, ओना ई रातकेँ समाजक पँचरेदीमे उठैसँ, झुदा अहाँ घबक
गाबजन छी तँ पहिने अही बुझा दिख ।”

अपन रैडत मान देखि नातकाका रैजना- “रैस रात मनमे एत । तेहने जुग-
जमाना भ२ गेल छि जे लोक मुठो रातकेँ तेना रैड ।-चट । क२ रैजे जे
जेना ओकरे बाज होग ।”

“असथिबसँ बुझा क२ कहथ”

कहनि- “काका, अही कछ जे अ उचित होग, जग समाजक पाग अकासमे ठेकने
छी तग समाजक लोककेँ कियो थापुव तँ कियो भोजनभष्ट कह ?”

नीक जकाँ नातकाका ने बुझा । दोहरोनि- “कनी हबिछा क२ रौजह ने ?

काकाक आशा पारि अपनो आशा जगन । कहनि- “काका अथुनका जे रौखक
रौबियाती भ२ गेल छि तेकबा गामक सब दू व क२ देनक तेन, ओकरे देखा-देखी
हमरू दू व क२ दिई से नीक हएत ?”

रौन रात बुझने ठेकावा दैत नातकाका कहनि- “से तँ नहिये हएत । झुदा रात
कि तेन से ने रौजह ?”

कहनि- “काका, देखते छि जे अथुनका रौबियातीमे रैसी गोष्टे ओहने बह जे
चूड । भुजा तडन माछ आ दुष्ट रौतन घबराबी दिसिँ परिते छाती उघाबि क२ जश
द२ दग छै, किछ गोरे सए-दू-सए बसगला आ प्रवा जश द२ दग छै, झुदा हम तँ



तगसँ भिन्न छी । भोजनक झूठा अंग गोबस छी । एक तँ ओहना घबराबी पाँट
किनोसँ रैसी दहीक ओबियान नहियेँ करै छथि, तेकवा जँ छच्छ क२ दग दिई तँ हम
थाधुव भेलौं कि समाजक गज्जति बथै छिई । तगने लोक एना किथए रैजेए ।

ई कनापब अपन मँतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



प्राज्ञ कापडि केशरनाथ राँथ शिवपा सम्मानसँ सम्मानित बिपेष्ट पुन्य मन्दर

प्राज्ञ कापडि केशरनाथ राँथ शिवपा सम्मानसँ सम्मानित

नेपाल भाषा परिषद मैथिली भाषाक चर्चित साहित्यकार एर प्राज्ञ बाबु भरोस कापडि
भ्रमबर्के केशरनाथ राँथ शिवपा सम्मान(प्रवक्ता)सँ सम्मानित कएलक छि ।

बाङ्गिय भाषामेसँ एक मैथिली भाषामे उक्तेष्ट साहित्यिक बचनसभ क२ मैथिली भाषा
साहित्यक श्रीरुद्रि केने कएने योगदानक कदर करैत परिषद प्रसिद्ध कथाकार
केशरनाथ कर्मचार्यक नाममे स्थापित (केशरनाथ राँथ शिवपा) सम्मानसँ हुनका सम्मानित
कएने छि । ओहि अरसब पब प्राज्ञ कापडिकेँ दश हजार नगद एर सम्मानपत्र प्रदान
कएल गेल छल ।

करिकेशरी चित्रधर द्वयक १ सय गम जन्म जयन्तिक अरसबपब नेपाल भाषा परिषदक
अध्यक्ष फनिन्द्र बने त्रैजाचार्यक सभापतिहमे मंगल दिन सम्पन्न समारोहमे प्राज्ञ भ्रमब
उक्त सम्मानसँ सम्मानित भेल छथि । सम्मान ग्रहण करैत प्राज्ञ भ्रमब मैथिली आ
नेपाल भाषाक समृद्ध मध्याकारसँ निबन्धन बहल आ मैथिली भाषा साहित्यक अनेकौ प्राचिन
अभिलेखसभ नेरारी निपौक विभिन्न संग्रहमे संग्रहित बहल रैतौलनि ।

राज्य पञ्चसँ अन्त्यायमे पबल अन्त्य भाषा संगति आ दुनु भाषासभ अपन अस्तित्वक बम्कारेँ
नेर निबन्धन संघर्षबत बहल सेहो रैतौलनि । रिफ्रम सम्वत् २००१ सालमे स्थापित
नेरारी भाषा साहित्यक अग्रणी संस्था नेपाल भाषा परिषदसँ मैथिली भाषाक साहित्यकारकेँ
प्रदान कएल गेल आ सम्मान पहिने रैब छि ।



ओहि अरसब पब नेपाल समित ११३२क भाषाथुरा प्रबन्धक प्रा. प्रेम शान्ति तुलाधर, २३ हजार बाशीक चित्रधर सिवपा प्रबन्धक गायक भुवनाम श्रेष्ठ, १३ हजार बाशीक ठाकुर नान सिवपा प्रबन्धक निरन्धकाब सुरेन्द्रमान श्रेष्ठ आ मोतीनान सिवपा प्रबन्धकसँ अन्तर्वास्तुय भिक्षु संघकेँ सेहो सम्मान कएल गेल छल । ओहि समारोहमे पविषदक उपाध्यक्ष प्रा. शूर्पा शिवा, महासचिब नरीन्द्रबाबू जोशी, पविषदका सदस्य नरेशिब शिवा सहितक रजसभ मातृभाषाक साहित्यमे योगदान देनिहार संघ संस्थाकेँ बाबू बेरान्ता कबरौक एम गणतन्त्र अनाकरौदो नहि बकर प्रति चिन्ता बाबू कएने छलथि ।

ई कनापब अपन मतार ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



डमेश मण्डल, नि नर्मनी, सुपौल ।

वधूकथा

जीरिजे नरु



सोन-रुप जहिना आगिक ताड पारि गरुण नगैए तहिना आमे ग्लानिसँ गलैत बाधामोहन
 ब्रह्मस्थान पहुँचन । तेसबि साँझक समए बह । पहिने साँझसँ जे गामक माए-रहिन सब
 आरि-आरि काँच माष्टक दिखारी नैसि साँझ दैत आएन छेरी ओ दोसबि साँझ छपैत-
 छपैत पतवा गेल छेरी । यएह सोचि बाधामोहन तेसब साँझकमे पहुँचन छन जगसँ
 कियो देखए नै । किछ मानेमे झुझैत नैक छलै । एक तँ एकान्त दोसब अन्धार आ
 तेसबि देखिनिहारो-सुनिनिहार नै । ब्रह्मस्थानक झुझैत नग आरि बाधामोहन अँठकि
 गेल । अँठकि कि गेल जे एव ठमकि गेलै । चाककात आँखि उठा तकक तँ
 अन्धारमे नै रैसी दूर देखक आ नै अन्धार छोड़ि किछ आन देखेलै । मन मनि
 गेलै जे नै कियो देखिनिहार अछि आ नै सुनिनिहार । राहब अन्धारमे स्थानक
 चाककात करुब सब अपन-अपन सीमानक टोकसी नीनभेब भइ करैत बह । नीनो
 केना नै अरिते, भिनस्रबका दुधक ठाव तँ रएह सब नै पीरौ करैए आ पठका-पठका
 करैत नेहरू-थकरो करैए । खेतिकर जहिना नीक उपजैत खेतक आड़ा यो पकिया
 खेत रैनरै चढि आ अथरा उपजा भेने नीको खेतकेँ पवता-पवता पवती रैना
 दगए जगसँ राँठ-रैठेही रीचे खेत देने बस्ता रैना रीचे-रीच चरए नगैए तहिना
 बाधामोहन अपन कएन काजक ग्लानिसँ पकियागत-पकियागत देरानय पहुँच गेल ।
 हीयकेँ हारैत आगमे ठाढ़ केनक । जेना-जेना भीतब प्रवेश करैत गेल तेना-तेना
 मनो पसिनेत गेलै । अंतमे एहेन भेलै जे पूँखा रैन अकास उड़त आकि पाखर
 रैन पानिक पहाड़ रैनत तग गनधुनमे पड़ि गेल । दूनु हाथ जोड़ि राजन-

“हे रैबहमराँवा, अपने यमबाजकेँ कहियन जे ज़रिये नबक पठा दयि । जहिना अपन
 मित सग तहिना सकम्पाक हलवा छी; हलवा छी ।”

कहि बाधामोहन महादेव जकाँ तान्दर नाच-नाचए नगन ।

बाधामोहन आ रिसमोहन रँचसँ नंगोष्टिया सगी । एकठाम दूनुक घरौ छै । राध-
 रौनसँ नइ कइ घर-आंगन धरि सँगे बह छन । महारिद्यानयक अन्धारमे दूनु गोरे
 मैथ्रीक पास कइ बहि गेल । आन-आन रिषज जे जहिना पठक से तहिना ससबि
 गेलै झुदा समाज अध्यायनक छँकाड रिषय, छँकन बहलै । जगसँ दूनु मिनि अपन
 पहिचान आ सक्रपकेँ मजगुत रैनरैमे गाबि-गरौरनिसँ नइ कइ माबि मरौरनि धरि
 कवरौ केनक आ कएक रैब जहना गेल आएन अछि ।

जहिना नड ाग नडि जहल गेनिहार जेन जेनागकेँ खबाम कवर रूनेए, सएह
 अथैन धरि गहो दूनु गोरे रूनेत आएन छन । एक जातिक बाधामोहनो आ
 रिसमोहनो झुदा दूनुक रीच दू दियारी । ओना दूनु दियारीक रीच पुस्तनी नगड ा चरि



थरै छले झुदा दनुक दोस्तो तेकवा मेष्ठा जकाँ देने छले । जे पछाति आरि क२
थेनाग-पीनाग, रैब-रैबियाती सब चरए लगले । ओना, नरका तूबकेँ पछिना रात ने
कियो कहनिहार आ ने कियो बुमरौ करैत । झुदा जहिना गहीबगव खादिकेँ उपवका
थब-पात छिन-छानि क२ भवनापव उपवसँ भवत बुमागए, झुदा हाथीकेँ के कहए जे
पियो-पुताक पएव चपि जाग छै तहिना बापामोहन-रिसमोहनक दियादीक रीचक खादि
उपवसँ तँ चिक्कन रैनि गेल छेलै झुदा भीतवसँ भितवाएने छल ।

रिसमोहनक पितियौत भाए मनमोहन झुम्रंगमे रीस रैबथसँ नोकरी करैत
आएत छल । एक परिवार बहने घवाड़ कि रैरावा भागे भाग भेल छले, जगमे
दनुक घरो आ राँड़ १०-माड़ १ छेलै । ओना दनु परिवारक घवाड़ १ रोड पकड़ए
झुदा रिसमोहनक घवाड़ १ रंगरमे तीन-रैठिया, जेपव दसठि दोकान-दोरी रैसि
चौक जकाँ रैनि गेल । चौक भेने रैजावक झूठ खुगल । एक्क खेत बहिने एक भाग
झुहथरि रैनि गेल आ दोसव गोवथारी । जगसँ दनुक महतमे घष्टी-रैठ १ भ२
गेलै । झुम्रंगमे बहने मनमोहनक रिचावमे सेहो रैदराड एलै । जगसँ नोकरी
करैसँ नीक अपन धंधा मनमे एलै । स्वाभारिको छेलै, औद्योगिक शिहव झुम्रंग आ
तेतए मनमोहन रीस रैबथ रितेने छल । झुदा अपन जिनगी तँ तेना ओमवा गेल
छै जे साठि रैबथसँ पहिने छोटत तँ पेन्शनकेँ के कहए जे आनो-आनो जमा-जुमी
डुमि जेते । तँए मनमोहन अपन रिचावकेँ रैष्ठा उपव केन्द्रित केनक । निर्णय क२
लेनक जे रैष्ठाकेँ औद्योगिक शिक्षा दियाएब । ओना उद्याग तँ बग-रैबगक दुनियाँमे
पसवत छल झुदा अपन मनोकुत उद्याग रैसी नीक होग छै । सह केनक ।

रैष्ठाक पठ १ग छोटनापव मनमोहन सभतुव गाम-आएत । जगरैव गेल बह
तगरैव एक्काष्ठा दोकान ने रैनत छेलै । अथन प्रधानमंत्री योजनाक सडक, तीनष्ठा तीन
कोनपव चापाकर आ एक-आध घष्टि रैसिक जोगाव सेहो रैनि गेल जेकवा देखि
झुम्रंगक चौराहा मनमोहनक मनमे नाचि उठलै । मनमे उठिते अनैतिक राँठ ताकए
लगल । मनमे एक्काष्ठा मश्री जे रिसमोहन हमवा दिस चलि जाए आ हम चौक सागड
चलि आरौ । तीन कष्टा चौकक जमीन । नाथकेँ के कहए जे करोड़ १क हएत ।
करोड़क कारोबार लेल दू-चाबि नाथ छिष्टै पड़ छै । जारै से ने हेते, तारै
छिड़-चुनझनी पछोव केना केना लगल ।

गाम तँ अथनो रएत गाम छी जे छुड़ १-दहीक संग चीनी मिठा तीत-मीठ गिरेत
आएत छल । हरीदपव दस गोष्टेकेँ कोनो भाँजे अपना दिस केनाग, यएह अथुनका
पनचैती छी । १ रात मनमे अरिते मनमोहन गामक थोकाव पँचकेँ पछिया घवाड़ १
उनठरैक योजना मनमोहन रैनैक । सँवुका नटा या जहिना पु सुनिते सभ पुपुआए
लगैए तहिना एक स्रवमे सभ पँचैतिया आउण्ड रैना लेनक जे जखनि कानूनी रैरावा



नै छिई तखनि ओ रँष्टरैने ने भेल । मोथिक रँष्टरावक कोनो मानि नै । भवति
रेद-शोम्वक अथाव-रात किथए ने ह्थए ।

पाँच परिवारक दियादी रिसमोहनक । असगरे दनु राँपुत रिसमोहन गाममे बहै
आ राँकी सब दियाद झुमँगएमे । ओना दनु राँपुत मनमोहन रूँगरो ।

बाधामोहन सेहो पनचैतीमे अथर । नटाँ या जेबमे अपनो नटाँ या रँनि
रिसमोहनक संकल्पित मित्र बाधामोहन छुपे बहर । अपन स्थिति कमजोब हाँगेत
देखि रिसमोहनक मन बाधामोहनकेँ ओग नजबीए देखक जेहेन रँनिदान हाँगेत समए
छागबक हाँगे छै । झुदा संकल्पित जिनगी । अपन हँसत अंत देखैक जित्तासा करैत
रिसमोहन बाधामोहनकेँ पछुतके-

“आन जे ह्थए । झुदा तूँ तँ संकल्पित जिनगीक सर्गी छिईह, झूँह किथए रँन
बखनँह ?”

रिसमोहनक मनक रात रूँमितो बाधामोहन दियादी आडाँ ठाढ़ क२ ओही आडाँ मे
अबिया गेल । भगैत-पड़ १गत संकल्पित सर्गीकेँ देखि रिसमोहनक मन संकल्पकेँ
अग्न्यरैत धधकि गेल, राजन-

“जग धवतीपर नुठ-हुसमे लोक अपन रँनि चटा बहर अछि तैठाम अपनो जून्म
अपने नै बोकि पारी । आ तँ जिनगीकेँ पाखा देनाँगे भेल । आ रात सत् जे
रँनिदान कतए हाँगे...”

रमकि क२ फेबि राजन-

“हम पनचैती नै मानरँ । आ धवती हमब रँनि मंगैए ।”

चट १-७तबी रँजनिहावक रौन गाम । तेना वनकावा भवक जे दनु राँपुत मनमोहन,
दनु राँपुत रिसमोहनकेँ माबि नठियौनक । जे आठम दिन जागत-जागत रिसमोहन
खतम भ२ गेल ।

ई कनापब अपन मतबर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।

३. पद्य



३.६. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिर' - गजल १-४



३.२.१. कली कामत-गीत:- जल-जलन २.



शान्तिनक्षी चौधरी-नेताजी



३.३. जगदानन्द सा 'मन' - के पतियाएत



३.४. मनोज कुमार मन्द-देशी कौथा



३.५. रुदन कुमार कर्ण- गजल



३.७. जगदीश प्रसाद मण्डल-सुख काज



३.१. बाजदेर मण्डल- दु ठा करिता



३.४

सह नावायण-वहकैत समाज



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिर'

४ ठा गजन

1

एते रामन किह बह छी अपनामे अहा
अरै छी रँडी-रँडी बाति क' सपनामे अहा ।

चनि जाड दिह्नीए कि झरँगा कि रँगलौब
बहरँ एसगब कोना क' पठनामे अहा ।

होगए सार भवि पब भैठै दुनु गोठैके
जखन कठनीमे छी हम, सतनामे अहा ।

भैठै जेता शिकनी, दुर्योधन आ धृतराष्ट्र
मिना क' देखरै आरँ कोना घटनामे अहा ।

ओकबा किह मारै छिई झक्कास अहा भाग
जेहने छी तेहने देखरँ अयनामे अहा ।

गवमीमे जन तँ भगए जागए अमृत



चाहे ज़ाठामे बाथि पीरू कि रँधनामे अहाँ ।

रिराहके रिराहक गबिमा कक प्रदान
किए हंसल छी कपडा आ गहनामे अहाँ ।

सबल राक्षिक रँहब, रर्ष-16

2

जंगल आओव पहाड देखलौं ज़ीरनमे
खजखज बाति अन्हाव देखलौं ज़ीरनमे ।

मोनक नीलगगनमे छिठके रिरजलौका
ममता आ म्हा- दूनाव देखलौं ज़ीरनमे ।

मन आंगनमे चाकधामक दर्शन भेल
मुलाक ठाँ आ रँजब देखलौं ज़ीरनमे ।

नूँ, गीत,संगीत,चौर ओव हँसी-ठहक्का
नोबक कतेक ठाँव देखलौं ज़ीरनमे ।

माबि-पीठ,दंगा आ फसाद, छीना आ नपठि
आदब आओव सकोव देखलौं ज़ीरनमे ।

देखलौं गंगा रँह छुली अपने अन्तबमे
पोथबि आ पाव- अनाव देखलौं ज़ीरनमे ।

सबल राक्षिक रँहब, रर्ष-16

3

अपन कहै, सुनै हमबा
किछै लोक चिन्है हमबा ।

सुप जं हम त चावनि अछि ओ
तेयो मुँह दुसै हमबा ।

जकरे खातिर दोबि केलौं
सेहो दोब कहै हमबा ।



एसगवमे तं पएव छुरैए
लोक न ग गवियरैए हमबा ।

काष्ट छीष्ट क गेल रौष्ट पव
आरै तान पुष्टैए हमबा ।

टोव टिकडि क राजय जखने
तामस तखन उठैए हमबा ।

हम मुसस राघ रनेनिये
उनष्टे कवरै अरैए हमबा ।

मात्रा-15 प्रश्नक पातीमे

4

थिक हासक मैदान व जीरन,कोना रौटु हम
अपने मित्रक मृत्क काषा, कोना रौनु हम

सोमामे तं छथि दादा-दादी,कक्का-काकी,भैया-भौजी
सभस खेत-पथावक आतिव कोना चटु हम

बाज-पाष्ट की कवरै जखन लोके नहि बहते
भीषा नव-सहावक परित कोना चटु हम ।



भीख मागि रौक आएर,तडरै नहि भैयाबीमे
हे मधुसूदन गालीर हाथमे कोना धक हम

हे केशर, छपया हमबा दूरिधस झुंझ कक
हमव रूझि नै काज कवय, की कोना कक हम

सबन रार्पिक रौहव, रर्प-18

ए कनापव अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाउ ।



१.  कर्मी कामत-गीत:- जठ-जठिन २.  शान्तिवर्मा चौधरी-नेताजी

१



कर्मी कामत

गीत:- जठ-जठिन ।

जठिन- छोड़ा मिथिला नगबिया

राधि अपन आ पोछबिया

तू कतए जाग ठूँह रे..... ।

जठरा कतए जाग ठूँह रे..... ।

छोड़ा अपन सजनियाँ

तियाग क२ सब खुशियाँ



तू कतए जाग छै रे

जठरौ कतए जाग छै रे..... ।

जठर- जाग छियौ गे

जठिन देशे-गे-रिदेशे

जठिन देशे-गे-रिदेशे

भ२ गेलौए गेब आर

अपन प्रदेशे ।

साढ़ १ अनरौ गे जठिन

गहना अनरौ गे.....

साढ़ १ अनरौ गे जठिन



गहना अनरौ गे

रौखा-रूँछी जे सेहो

नर अंगा अनरौ गे ।

जठिन- ते जेरौ रे जठरौ

रिदेशिक सनेस

ते जेरौ रे जठरौ

रिदेशिक सनेस

हमरा तँ चाली जठरौ

तोहेव संग आ सिनेह ।

जाठ- ते रोक गे जठिन

हमर तँ डेग



कमेरै नै तँ केना

भबरँ सररुक पेष्ट ।

रौखा कनतौ गे जष्टिन

रूँछी नलेतौ गे

रौखा कनतौ गे जष्टिन

रूँछी नलेतौ गे

जबतौ जे पेष्ट जष्टिन

कोग नै सोहेतौ गे ।

जष्टिन- घुब-घुब रे जष्टी

स्वन-स्वन रे जष्टी



जिह्वा छोट रे जठर

कोण नै नल्लेतौ रे जठर

हरे जठरौ२२२२२२२२

रे मेहनति कवि नून रोटी खेरै

झुदा सँगै मिथिलामे बहरै रे जठर..... ।

चन-चन रे जठर

थपन देशे रे जठर

थपन खेत रे जठर

मकखा रोटी रे जठर

नून रोटी रे जठर

हे रे जठरौ२२२२२२२२२२



तू धान रोपाहेँ हम जतथे

न२ क२ एरौं रे जठा..... ।

जठा- स्न-स्न गे जठिन

हमर सजनी तू जठिन

घबक नक्षत्री तू जठिन

हमर जिनगीक गाड़ १ तू जठिन

हमर झानक खान तू जठिन

हे गे जठनी झा झा झा... ।

तू जीतवँह हम हावलो गे जठिन

छोडा खपन देशे



नै केतौ जाएँ गे जठिन

बरहै मिथिलेमे

सदैर खपन रौस गे जठिन

हे गे जठनीं आ आ आ... ।

गै दूनु गोवा मिनि

मेहनति कबरै तँ जिनगी स्रष्टा हेतैय गे जठिन ।

जठिन- हमर साजन तूँ जठा

तोहब सजनी हम जठा

हे रे जठरा२२२... ।

दूनु गोवा हँसत

खहिना जिनगी काँठर रे जठा..... ।



२



शान्तिवन्मन्त्री चौधरी

नेताजी

रौप रे रौप । ...

करैत छै कोना फड़फड़

उड़ैत फतीगा जकाँ

होड़ि देतय कथन ककब खाँथि

थोथवि नेतय कथन ककब झूठ

काँष्टि नेतय कथन ककब ससरी

मावि देतय तबछेरौ नठकन तबकल्ला

गाछ चढ़न पसीरौ जकाँ

बहो रा भाँड़मे जाँक बनतुब रँशितक

थपन नरैनी भरैक चाली रँक

राजय के छेरैता कष्टाह



रैपुतगव नाठीक जेव तै मोन छुनि ठैरैताह

पाँचायत खेनकै, रिनौक खेनकै, रैकौ खेनकै

थानो सग गिठपिठक तँ छैक सह तान

जतय धौगधेक जुथागर रारस्था

हँटेँगेर नै रैजेते फच-फच गान ।

ओह, ननकाबामे ओज की ? ...

जेना सूर्य होगथ नान-रान-पान, स्रभाचन्द्र रौस

कतय की राजथि तकव छैक कोन होस

धनिकायमे शोभय नेहक सन शुद्धरस

छोड़य पव साजन हूसि-हास सरिपान, रिधेयक, अप्यादेशे,

योजना, पविद्योजना, पाँचायतीबाज, लोकतंत्र आदिक अम्र

गिठगिठ तँ धवते शिखेक नै वग

कथनो स्रनष्टा, कथनो उनष्टे रैह गग

जेहने समय-पविस्थिती तेहने दर्शन

थन लोहिया, मार्क, नेलीनरादी

थनेमे स्रधर्म, संस्कृति, बास्त्ररादी,

दरैप गेनय मोन तँ निख कतैक नेरै गाँधियेक मंडन

रुमावराव रैठैके पविवाव द गवरीरेखामे नौरैक स्कारिग

अपन खेत आ रौड़ १ पठैरै सातठा रिनौकिया पपिंगसेठ-रौबिग

गदिवा-आवास, रूपापेसन, हसन-स्मृतिप्रतिक रैठरावामे



पिछरावक घाम छयवि जागन्हि एंड १

जेना चिन्तरे-गिहक स्वभागे खसल हो मरी

नेताजी छथि ओखन भाजपाक महामंत्री

दसे दिन पहिने बहथि जन लोकजनशैक्षिक अप्रिसंतरी

कियो कहत छनाह एम्बर भेनहि भितबिया जद-यूसँ साँगाँ

ओहिदिन लोनियाँरैत काँथेसिया-पेनियाँकै करैत छनाह राँस

बाजद केब मित्रभांग सँग छैहि सेहो उठक-रैठकी

बाजनीतिक लोकबलोकनिक सँगहि काँथे पानपवाग-छूँकी

पाँशीधर्म, सिङ्गाँत, ककरो सबकावसँ कथीक सरोकाव

ओतहि जयकावा जतय रिँनैय एक्काँठोप पँचमकाव

झूँह पविद्ध राजताह तँ रूमेता, अहा। कतेक ज्ञानीलोक

छैकि दिओ मधकाव, तँ लागि जागन्हि झणहिमे छैक

की कवरै, आगकान्हि बहलौ कतेक गोठैक राँतेक ठँव-ठीक

झूँदा रिसराँस दियाँरै बहि-बहि छरत माथक छीक

भेँठैत एहने ठोपधारी हिनु जे झूसि राजत गँठगँठ

मियाँ नमाजी हजाररैव दाढ़ १ छरिं आगत सम्पत

नेताजीतँ कहत छथि अपनारै बाजनीतिक चाँक

झूँदा भविगामक लोक कहन्हि हिनका आगत आगत रानव

ए कनापव अपन मँतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



जगदानन्द मा 'मनु'

ग्राम पोस्ट - हविप्रव डीहठेन, मधुबनी

के पतियाएत

के पतियाएत

आ कएकबा कहू

सभक आँखिमे

पसि कए कोना बहू

सदिखन आँखिब

हमरेपर उठन

कतेक परीक्षा

आरौ सहु

जतए ततए हमही

दूठन गेनहु

घब रौहब सभतबि

हमही ठकेनहु

हम नाबी नहि

नबकेँ भोगा



सरैदिन हमहौ

जितन गेनहूँ

सुहृष्टे घब-घब

पूजन जाग छी

झड़ १ मटोबि हम

भोगन जाग छी

थारु बारण

रैनि भाग हमब

बामसँ पाछु

छुठन जाग छी ।

ई कनापब अपन मतलब ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



मनोज कुमार मन्दल

देशी कौआ



मन पवि बहल अछि ओ दिन
जहिया माएक हम छेष्ट नैना बही
माएक आँचव तब थेनैत-धूपेत बही
माएक रौन हमब धियान एक बह छैनए
जखने रँजै अँगनामे कौआ
बूढ़ि या दादी राजि उठै छेली
पाहन एता एना तगि बहल अछि
सुनिते मन गद-गद भऽ जाग छैनए
आरै तड़ुआ-तबकारी के प्रहैए
दही-चीनी सेहो भैष्ट
दिन भविमे कएक रैब प्रहैए
माए आग कथनि पाहन गुता
आरै ओग दिनक यादें बह गेल
देशी कौआ मवि-मवि गेल
काबकौआ गिबिहँस भऽ गेल
आगक कौआ राजरै अ भऽ गेल
अमंगलक सनेस दऽ गेल
कौआ रँजिते कनियाँ कह छथि
तेप नऽ एकवा भगाउ
हम प्रहृष्टियनि कि कह छी
रिन भगौने देशी कौआ भागि गेल



की कारो कौआके रीदाहे क२ देरै

कौआ देखरै सपना क२ देरै ।

ई कनापब अपन मंतर ggaj_endr_a@vi_deha.com पब पठाड ।



रुन्दन कयाव कर्प

गजल

नजबिमे नजबि त२ मिनाक देखु
दीप नेहके त२ जबाक देखु

दिन अथन करी अछि प्रिय अहाँके
ओ करी अहाँ त२ थिनाक देखु

चेहवा अहाँक चमेक जेते
आँखिमे अहाँ त२ रँसाक देखु

दोहवाक भेष्टत नहि जरानी
मोनमे डमंग जगाक देखु

रँबसि पडत सारन जीनगीमे
हमब जेन कप सजाक देखु

२१२-१२११२-१२२

ई कनापब अपन मंतर ggaj_endr_a@vi_deha.com पब पठाड ।



जगदीश प्रसाद मण्डल

सुखन काज.....

सुखन काज जेते जिनगीमे
सुखन-सुखन करैए नगै छै ।
हने-हन रन-रन रनैत
रंगिया राग रनै नगै छै ।
रंगिया राग रनै नगै छै ।
सुखन काज..... ।

पुस पुसौष्ट कहि-कहि
मसिया हन पेरैए नगै छै ।
अपिया हस्त अपिया अदवि
पथ मसिया पेरैए नगै छै ।
पथ मसिया पेरैए नगै छै ।
सुखन काज..... ।



पथिया पथ पथड़ा - पथड़ा
सतिया सात सतिना नगौ छै ।
आठिया आठिक आड़ा रैन
हपता-सपता रैनए नगौ छै ।
हपता-सपता रैनए नगौ छै ।
सुखन काज..... ।

काम-धाम कि धाम-काम
मन मदिब मनरैन नगौ छै ।
अगति-रैगति नतवि फड़ा
अमवतती कहरैन नगौ छै ।
अमवतती कहरैन नगौ छै ।

छुछु हाथ झूठमे जहिना
किछु ने द२ पारि परै छै ।
बेद भेदन भेद ने बुमि
कर्मक फल परैत बह छै ।
कर्मक फल परैत बह छै ।
सुखन काज..... ।



ई कनापब अपन मंतर ggaj_endr_a@vi_deha.com पब पठाउ ।



बाजुदेव मण्डव

दू ठा करिता-

बाजुदेव मण्डव

उतहन

सभ तँ बह छै अहीन रग-पास

हम तँ अरै छी चासे-मास

पढ़ि गेल रिपति भेलौं निवाशि

अकारक कारणे डहि गेल चास

दिन अदहा पेठ बाति उपस

मनमे छेलथ जे पूवा रहत आस

भोजीक ताना सुनि आँखि भवन नोब

रैथामँ भवन मनक पौब-पौब

एक झुंझी देनासँ की भ२ जाएत थोब

आँखिसँ रहि बहन अछि दहो-रहो नोब

हमब नोब नै रनि जाए अँगोब

यो भैया, एकदिन हमरो हेते भोब

छुप्पी साधने खसौने छी पाड़



ई सम्पतिपव छै हमरो अधिकार

आगुमे ठाढ़ रौनपनक पियाव

नाता तोड़ि केना कबर तकराव

कनेत जा बहन छी जाव-जाव

माए बहत तँ करैत दूनाव

अपने चास-रौसपव कबए पड़त आस

रौराक रैखावी आ धियाक उपस । ”



आपसी

“जिनगी भवि दैत बहनों हूँ

आपस भेटै बहन अछि शून

मन भऽ गेल रियासत

किछ अ भेटैत आ डाँड

कहाँ केनौ कोनो भूत

देहना चीज नै देरै

हम देने बही हूँ

काँ केना लेरै ? ”

“हमबा लग रहत अछि तँ दोसब की देरै

जखनदस्तीओ कबरै तँ आरो की लेरै । ”

“थूँगी बहन अछि मनक बाज

सुखबखसँ भवन छन हमब काज । ”

ए कनापब अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



सब नाबायल

नहकैत समाज -----
केथनो क' मोन भठैकि जागए
केथनो मोन अठैकि जागए
आ केथनो मोन भवकि जागए
झुदा की कक, किछु ने मोहागत अछि
लोकक रिदुप चेहवा ओहिना देखागत अछि
कियो ने भेटैत अछि, ककवा कहैक
के सनत केकवा पनथेत छैक
समाज रदकप ओमवायन छै
बूछैवा बूछैत छै, समाज देखेत छै
के राजत केकव मजान छै
सभ त' बूछैय मे अपने रैहान छै
जे छैरुव छैरुव देखेत छै, ओ त' नाचाव छै
ओ की रजते ओ त' रैदम छै
साँस लेत छै रौन निस्पंद छै
कतौ अकार छै, कतौ दुर्भिक्ष छै
कतौ ठनका ठनकैत छै, कतौ रज्जु खसैत छै
झुदा जे निधुव छै, शीतान छै
ओकवा न' रज्जु आसान छै
ओहन लोक कहियो नहि सुधवत
रैमानी, शीतानी कहियो नहि रिसवत

ई कनापब अपन मतलब ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।

बिदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती



१. मोहनदास (दीर्घकथा): लेखक: उदय प्रकाश (मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुराद रिनित उपेन)

मोहनदास (मैथिली-देरनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलासुब)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैल)

२. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक सुशीला सा द्वारा मैथिली अनुराद

छिन्नमस्ता

३. कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुराद श्रीमती कपा धीर आ श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

भगता रैङ्क देशे-भुषा

४. तुकाबाम बामा शैष्टिक कोकणी उपन्यासक मैथिली अनुराद डा. शिबु कुमार सिंह द्वारा पाथनो

रौताना छते

रौता लोकनि द्वारा स्वर्गीय ग्लोक

१. प्रातः काल ब्रह्मद्वैत (सूर्योदयक एक घण्टा पहिने) सरप्रथम अपन दू हाथ देखैक चाही, आँ ग्लोक रैजैक चाही ।

कवाथे रसते नक्षत्रः कवमन्त्र सबस्रती ।

कवमुने स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नक्षत्र रसित छथि, कवक मध्यामे सबस्रती, कवक मुनमे ब्रह्मा स्थित छथि ।
भोवमे ताहि द्वारे कवक दर्शन कवरैक थीक ।

२. संध्या काल दीप तैसरैक काल-

दीपमुने स्थितो ब्रह्मा दीपमन्त्र जनार्दनः ।



दीपाग्रे शिखरः प्राकृतः सन्ध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मूल भागमे ज्वला, दीपक मध्याभागमे जनार्दन (रिष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे शिखर स्थित छथि । हे सन्ध्याज्याति । अहाँकेँ नमस्कार ।

३.सुतराँक काल-

बार्म स्कन्द हनुमन्त रैनतेर्य वृकोदबम् ।

शियने यः स्मरेन्निरं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति ॥

जे सभ दिन सुतराँसँ पहिने बार्म, क्रमावस्त्रामी, हनुमान्, गरुड आऽ भीमक स्मरण करैत छथि, हुनकर दुःस्वप्न नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

४. नहराँक समय-

गङ्गा च यद्गने टेर गौदारवि सबस्रति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽस्मिन् सन्निधिं करु ॥

हे गंगा, यद्गना, गौदारवी, सबस्रती, नर्मदा, सिङ्गु आऽ कारेवी पार । एहि जनमे अपन सान्निध्य दिथ ।

५.उत्तर यस्मैन्द्रस्य हिमाद्रश्चर दक्षिणम् ।

रर्ष तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सम्पद्रक उत्तरमे आऽ हिमाद्रक दक्षिणमे भावत अछि आऽ उत्तका सन्तति भावती कहलैत छथि ।

७.अहर्णा द्रौपदी सीता तारा मन्दादरी तथा ।

पञ्चक ना स्मरेन्निरं महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहर्णा, द्रौपदी, सीता, तारा आऽ मन्दोदरी, एहि पाँच साप्ती-स्त्रीक स्मरण करैत छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

१.अश्विथोमा रैविरासो हनुमाँच रिभीषणः ।

पुनः पञ्चवामश्च सन्तते चित्रङ्गीरिनः ॥



अग्निथोमा, रवि, रास, हनुमान्, रिभीषण, छपाचार्य आऽ पञ्चवाम- ए सात ठाँ चिबङ्गीरी कहँरैत छथि ।

+साते भरतु स्रुतीता देरी शिखर रासिनी

उत्थेन तपसा नद्धा यथा पञ्चपतिः पतिः ।

सिद्धिः साक्ष्य सतामस्तु प्रसादान्तुष्ट धूर्जष्टेः

जाल्हरिफेननेखेर यनूपि शिनिः कता ॥

९. रानोहँ जगदानन्द न मे राना सबस्रती ।

अपूर्णे पंचमे रर्षे रर्षियामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूरस्थित मन्त्रेष्टन यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्निवस्य प्रजापतिवृद्धिः । निभोकता देवताः । स्रवाङ्कृतिश्रुन्दः । षड्जः
स्रवः ॥

आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मरुचि जायतामा वाष्ट्रे वाजुन्यः श्रवेऽगमरातिरापी महारथो
जायतां दोग्ध्री धेनुर्वीटान्द्रानाश्वः सन्तिः पृथग्विर्होरा जिष्ठु वथेष्टाः स्रुतेयो हारास्य
यजमानस्य रीरो जायतां निकायमे-निकायमे नः पृज्ज्या रर्षितु फनरत्ता नः ०४षयः पचात्रा
योगेष्टमो नः' कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोवथाः । शिष्टां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां दयस्तु ।

ॐ दीर्घार्तिर । ॐ सौभाग्यरती भर ।

हे भगवान् । अपन देशमे सुयोग्य आ' सर्रुत रिद्यार्थी उपेन होथि, आ' शुत्रुके नाश
कएनिहोव सैनिक उपेन होथि । अपन देशक गाय खुर दुध दय रानी, रैवद भाव रहन
कबधमे सम्म होथि आ' षोड १ ह्रित कर्पे दोगय रैना होए । स्त्रीगण नगबक
नेत्र कबरामे सम्म होथि आ' हरक सभामे ओजपूर्ण भाषण देरैयरैना आ' नेत्र
देरामे सम्म होथि । अपन देशमे जखन आरथक होय रर्षा होए आ' ०४षिक-रूँठी
सर्रुदा पविपक्र होगत बहए । एर क्रमे सभ तबहँ हमरा सभक कर्णा होए । शिष्ट
बुद्धिक नाश होए आ' मित्रक उदय होए ॥

मन्त्रार्थके कोन रस्तुक गछा कबरौक चाही तकव रर्षि एहि मन्त्रमे कएत गेल छथि ।

एहिमे राचकब्रुथापमानड्काव छथि ।



खनय-

ब्रह्मन् - रिद्धा आदि ग्रन्थसँ पविर्पूर्ण ब्रह्म

बाष्पे - देशमे

ब्रह्मरुचि-ब्रह्म रिद्धाक तेजसँ हकत

आ जायता- उपेक्ष होए

बाज्यः - बाजा

श्वरे- रिना डब रिना

अमरा- राश चलेरामे निष्पल

अतिरापी- शत्रुकेँ तावण दय रिना

महाबथो- पेघ बथ रिना रीब

दोग्ध्री- कामना(दुध पूर्ण कबए रानी)

धेनुर्बोठान् डरान्श्वः धेनु- गौ रा राणी र्बोठान् डरा- पेघ रीबद न्श्वः - आश्वः - ब्रवित

सन्धिः - घोडा ।

प्रवर्धियेरा- प्रवर्ध- रारहावकेँ पावण कबए रानी येरा- मदी

जिष्णु- शत्रुकेँ जीतए रिना

बथेष्ठाः - बथ पब स्थिर

सुतेयो- उतम सभामे

हाराश्व- हारा जेहन

यजमानश्व- बाजाक बाजामे

रीरो- शत्रुकेँ पराजित कबएरना



निकामे-निकामे-निश्चयकृत कार्यमे

नः-हमब सभक

पुर्जना-मेघ

रर्षतु-रर्षा हेत

हृत्तरवा-उत्तम हृत्तर रैना

उषधयः-उषधिः

पचात्रा-पाकए

योगेष्कमो-अनन्त नन्त करैरौक हेतु कएन गेन योगक बम्का

नः'-हमबा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ हेत

त्रिभिन्नक अन्नराद- हे त्रिन्न, हमब बाज्यमे त्रिन्न नीक धार्मिक रिद्धा रैना, बाज्य-
रीव,तीव्रदाज, दुध दए रैनी गाय, दौगय रैना जन्तु, उद्यमी नाबी होथि । पार्जन्य
आरथकता पडना पब रर्षा देथि, हृत्तर देय रैना गाछ पाकए, हम सभ संपत्ति
अर्जित/संवर्धित कबी ।

बिदेह नूतन अंक भाषापक बचनानेखन-

आइनिशकोष-मैथिली- / मैथिलीकोष-आइनि- प्रोजेक्टकेँ आगु रैद १३, अपन स्मार
आ योगदान आ-मेन द्वारा ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

१.भावत आ नेपालक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाएन मानक शैली आ
२.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

१.नेपाल आ भावतक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाएन मानक शैली



१.१. नेपालक मैथिली भाषा बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाउन मानक उच्चारण आ लेखन शैली

(भाषाशास्त्री डा. बामारताब यादरक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग नऽ निर्धारित)

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१. पञ्चमार्गक आ अनुस्वारक पञ्चमार्गबान्धुतात ओ, ए, ण, न एरँ म अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अनुस्वार शिष्टक अन्तमे जाहि रत्नाक अक्षरक बँहल अछि ओही रत्नाक पञ्चमार्गक अरैत अछि । जेना-

अङ्ग (क रत्नाक बहरौक कावणो अन्तमे ङ् आएन अछि ।)

पञ्च (च रत्नाक बहरौक कावणो अन्तमे ञ् आएन अछि ।)

खल्ल (छ रत्नाक बहरौक कावणो अन्तमे ण् आएन अछि ।)

सङ्घि (त रत्नाक बहरौक कावणो अन्तमे न् आएन अछि ।)

खम्बु (प रत्नाक बहरौक कावणो अन्तमे म् आएन अछि ।)

उपर्युक्त रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमार्गक रैदनामे अप्रिकाशि जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखन जागछ । जेना- अँक, पँच, खँड, सँधि, खँड आदि । व्याकरणिद पण्डित गोरिन्द नाक कहँ छनि जे करत्ना, चरत्ना आ छरत्नासँ पूर्ण अनुस्वार निखन जाए तथा तरत्ना आ परत्नासँ पूर्ण पञ्चमार्गक निखन जाए । जेना- अँक, चँचन, खँडा, खल्ल तथा कम्पन । झुदा हिन्दीक निकट बहल आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अँत आ कँपन निखैत देखन जागत छथि ।

नरीन पद्धति किछ सुविधाजनक अरथ छैक । किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रँचत होगत छैक । झुदा कतोक रँब हस्तलेखन वा झुदणामे अनुस्वारक छोट सन रिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि । अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भारना सेहो ततरैत देखन जागत अछि । एतदर्थ कसँ नऽ कऽ परत्ना धरि पञ्चमार्गक प्रयोग कवरँ उचित अछि । यसँ नऽ कऽ त्र धरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग कवरैमे कतहु कोनो विवाद नहि देखन जागछ ।

२. ठ आ ट : ठक उच्चारण " व् ह् " जकाँ होगत अछि । अतः जतऽ " व् ह् " क उच्चारण हो ओतऽ मात्र ट निखन जाए । आन ठाम खाली ठ निखन जएरौक चाही । जेना-



ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेड्खा, ठम्, ठेवी, ठाकनि, ठाठ आदि ।

ठ = पढ़ १७, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रूँठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपह्राज शिष्ट, सभकेँ देखनासँ आ स्पष्ट होगत अछि जे साधारणतया शिष्टक शुकमे ठ आ मधा तथा अन्तमे ठ अरैत अछि । एएह नियम ड आ डक सन्दर्भ सेहो लागू होगत अछि ।

३.र आ रँ : मैथिलीमे “र” क उच्चारण रँ कएन जागत अछि, झुदा ओकवा रँ कपमे नहि लिखन जएरौक चाही । जेना- उच्चारण : रँदनाथ, रिछा, नरँ, देरँता, रिछु, रँशि, रँदना आदि । एहि सभक स्थानपर क्रमशः रैदनाथ, रिछा, नर, देरता, रिछु, रंशि, रन्दना लिखरौक चाही । सामान्यतया र उच्चारणक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४.य आ ज : कतहु-कतहु “य” क उच्चारण “ज” जकाँ करैत देखन जागत अछि, झुदा ओकवा ज नहि लिखरौक चाही । उच्चारणमे यङ, जदि, जझना, जुग, जारँत, जोगी, जद्, जम आदि कहन जाएरँना शिष्ट, सभकेँ क्रमशः यङ, यदि, यझना, हाग, यारत, योगी, यद्, यम लिखरौक चाही ।

५.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत अछि ।

प्राचीन रतनी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिष्टक शुकमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिष्ट, सभक स्थानपर यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थक सहित किछ जातिमे शिष्टक आवन्तामे “ए” केँ य कहि उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए आ “य” क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीन पद्धतिक अनुसरण कवरँ उपह्राज मानि एहि प्रसक्तमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोनो सहजता आ दूकहतक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ रैसी निकट छैक । खास क२ कएन, हएरँ आदि कतिपय शिष्टकेँ केँन, हेरँ आदि कपमे कतहु-कतहु लिखन जाएरँ सेहो “ए” क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि ।



३. हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पबम्पबामे कोनो रौतपव रौत दैत कार शिद्धक पाछाँ हि, हू नगाओन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकबहु, तकोनहि, टोछैहि, आनहु आदि । झुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपव एकाव एर हुक स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत छि । जेना- हुनके, अपनो, तकोने, टोछै, आनो आदि ।

१. ष तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकारितः षक उच्चारण थ होगत छि । जेना- षडान्न (खडयन्न), षोडशी (थोडशी), षष्टीकोश (थष्टीकोश), रूषेनी (रूथेनी), सन्ताष (सन्ताथ) आदि ।

+ प्रनि-लोप : निम्नलिखित अरस्थामे शिद्धसँ प्रनि-लोप भऽ जागत छि:

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य रा ए वृत्त भऽ जागत छि । ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जागत छि । ओकव आगाँ लोप-सूचक चिह्न रा रिकारी (' / २) नगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) नेन, उठए (उठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क नेन, उठ पडतौक ।

पठऽ गेनाह, कऽ नेन, उठऽ पडतौक ।

(ख) पूर्वाकारिक छत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) वृत्त भऽ जागछ, झुदा लोप-सूचक रिकारी नहि नगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाए (ए) देरै, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरै, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्यय अक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनुमे वृत्त भऽ जागत छि । जेना-

पूर्ण कप : दोसबि मारिनि चलि गेलि ।

अपूर्ण कप : दोसब मारिन चलि गेल ।

(घ) वर्तमान ह्रदन्तक अन्तिम त वृत्त भऽ जागत छि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत छि, रजैत छि, गरैत छि ।



अपूर्ण कप : पटे अछि, रजै अछि, गरै अछि ।

(७) क्रियापदक अरमान अक, उक, ईक तथा ठीकमे वृष्ट भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: छियोक, छियेक, छीक, छौक, छैक, अरितेक, होगक ।

अपूर्ण कप : छियौ, छिये, छी, छौ, छै, अरिते, होग ।

(८) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, ह् तथा ठकाक लोप भ२ जागछ । जेना-

पूर्ण कप : छन्हि, कहन्हि, कहन्हूँ, गेन्ह, नहि ।

अपूर्ण कप : छनि, कहनि, कहलौँ, गेन्ह, नग, नहि, नै ।

६.प्रनि स्थानान्तरण : कोनो-कोनो स्वर-प्रनि अपना जगहसँ हटि क२ दोसर ठाम चलि जागत अछि । खास क२ द्रस्त्र अ आ उक सँस्त्रमे अ राँत लागू होगत अछि । मैथिलीकवण भ२ गेल शिष्टक मध्य रा अन्तमे जँ द्रस्त्र अ राँ उ आरँ उँ ओकव प्रनि स्थानान्तरित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- शिनि (शिगन), पानि (पागन), दानि (दागन), माँटि (माँगटि), काँड (काँडु), माँस (माँडस) आदि । ऋदा तसेम शिष्ट, सभमे अ निथम लागू नहि होगत अछि । जेना- बश्मिँ वगश्म आ स्वर्णश्मिँ स्वर्णडँस नहि कहल जा सकैत अछि ।

१०.हलन्त()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ()क आरंभकता नहि होगत अछि । कावण जे शिष्टक अन्तमे अ उच्चारण नहि होगत अछि । ऋदा संस्कृत भाषासँ जहनाक तहिना मैथिलीमे आँन (तसेम) शिष्ट, सभमे हलन्त प्रयोग कएल जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिष्टकेँ मैथिली भाषा सँस्त्र निथम अनुसार हलन्तरिहीन बाखल गेल अछि । ऋदा र्कावण सँस्त्र प्रयोजनक लेल अलारंभक स्थानपव कतह्-कतह् हलन्त देल गेल अछि । प्रस्तुत पौथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ नरीन दुनू शैलीक सबल आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेटि क२ र्ण-रिग्रास कएल गेल अछि । स्थान आ समयमे र्चतक सँहहि हलन्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सबल होरँरँना हिसारँ र्ण-रिग्रास मिलाओल गेल अछि । र्त्तमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेरँ पडि बहल परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देल गेल अछि । तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषता सभ क्थित नहि होगक, ताँह दिस लेखक-मन्दर सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. वामरताव यादरक कहँ छनि जे सबलतक अनुसन्धानमे एहन अरस्था किन्हु ने आरँ देरँक चाली जे भाषाक विशेषता छँहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. वामरताव यादरक पावणकेँ पूर्ण कपसँ सँह र२ निर्धारित)



१.२. मैथिली अकादमी पठना द्वारा निरूपित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिष्ट मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि रीतिनीमे प्रचलित छल, से सामान्यतः ताहि रीतिनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

एथन

ठाम

जकब, तकब

तनिकब

अछि

अग्राह

अथन, अथनि, एथेन, अथनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकब, तेकब

तिनकब । (रैकम्पिक कपेँ ग्राह)

ईछ, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप रैकम्पिकतया अपनाओल जाय: भ२ गेन, भय गेन रा भ३ गेन । जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जाए बहन अछि । कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कबय गेनाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' प्रतिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अछि यथा कहनि रा कहन्हि ।

४. 'ई' तथा 'उ' ततय लिखल जाय जत' स्पर्शतः 'अग' तथा 'अड' सदृश उच्चारण गथ्र हो । यथा- देखैत, छलैक, रौआ, छैक अलादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिष्ट एहि कपे प्रयुक्त होयत: जेह, सैह, अएह, ओह, तेह तथा दैह ।

६. ह्रस्व अकारांत शिष्टमे 'अ' के वृद्ध कबई सामान्यतः अग्राह थिक । यथा- ग्राह देखि आरैह, मानिनि गेनि (मनुष्य मात्रमे) ।



१. स्त्रुतव ङ्ग ' ए ' रा ' य ' प्राचीन मैथिलीक उद्भवण आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक कर्पे ' ए ' रा ' य ' लिखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अयनाह, जाय रा जाए अलादि ।

४. उच्चारणमे दु स्वरक रीच जे ' य ' धनि स्त्रुतः आरि जागत अछि तकरा नेथमे स्थान रैकल्पिक कर्पे देन जाय । यथा- धीआ, अठैआ, रिआह, रा धीया, अठैया, रियाह ।

६. सान्नासिक स्त्रुतव स्वरक स्थान यथासंभर ' ए ' लिखन जाय रा सान्नासिक स्वर । यथा:- मैएण, कनिएण, किवतनिएण रा मैआँ, कनिआँ, किवतनिआँ ।

१०. कावकक रिभक्तिभक्त निम्नलिखित रूप त्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । ' मे ' मे अन्वसार सरिआ लाज्य थिक । ' क ' क रैकल्पिक रूप ' केव ' बाखन जा सकैत अछि ।

११. पूर्वाकारिक क्रियापदक रौद ' कय ' रा ' कए ' अरय रैकल्पिक कर्पे नगाउन जा सकैत अछि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ अलादि लिखन जाय ।

१३. अर्द्ध ' न ' ओ अर्द्ध ' म ' क रौदना अन्वसार नहि लिखन जाय, किंतु ङापक सुरिधार्य अर्द्ध ' ङ ' , ' ए ' , तथा ' ण ' क रौदना अन्वसारो लिखन जा सकैत अछि । यथा:- अर्द्ध, रा अर्क, अष्टन रा अँचन, कर्ण रा कँठ ।

१४. हर्त चिह्न निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिभक्तिभक्त सँग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सभ एकन कावक चिह्न शिष्टमे सँ क लिखन जाय, हँ क नहि, सँहाङ रिभक्तिभक्त हेतु कवाक लिखन जाय, यथा घब पबक ।

१७. अन्नासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा रङ्ग कयन जाय । पर्वत ऋद्धक सुरिधार्य हि समान जर्जन मात्रापव अन्वसारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक रौदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हि केव रौदना हि ।

१९. पूर्ण विराम पासिसँ (।) सूचित कयन जाय ।

२०. समस्त पद सँ क लिखन जाय, रा हाङ्गेनसँ जोडि क , हँ क नहि ।

२१. लिख तथा दिख शिष्टमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय ।



प्रबनका लोककें रैजैत स्वरैहि- मनोज्ञ, रासुरमे ओ थ हाऊ ज् = ऊ रैजै
छथि ।

हेव छ थछि ज् आ ए क सहाऊ कदा गतत उचावण होगत थछि- गा । ओहिना क
थछि क् आ थ क सहाऊ कदा उचावण होगत थछि छ । हेव गे आ व क सहाऊ थछि
ऐ (जेना ऐमिक) आ स् आ व क सहाऊ थछि ए (जेना मिस) । ए भेन त+व ।

उचावणक ऑडियो फागत रिदेह आर्काइव <http://www.videha.co.in/> पव
उपनद्ध थछि । हेव कै / सँ / पव पूर्व अक्षरसँ सँ क विथु कदा ठँ / क२ लै
क२ । एमे सँ मे पहिन सँ क विथु आ रौदरैना लै क२ । अंकक रौद ठी विथु
सँ क२ कदा अगु ठाम ठी विथु लै क२ जेना

छलै कदा सभ ठी । हेव उथ म सातम विथु- छठम सातम लै । घबरावमे रैवा
कदा घबरावमे रावी प्रहाऊ कक ।

बह-

बैह कदा सकै (उचावण सकै-ए) ।

कदा कथनो कान बह आ बैह मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कन्या जगहमे पार्किंग
कवरौक अत्रास बैह ओकवा । पढ़नापव पता नागत जे दूनदून नाम्ना आ ड्रावरव कनाठ
बसक पार्किंगमे काज करैत बह ।

छलै, छनए मे सेहो ई तबहक भेन । छनए क उचावण छन-ए सेहो ।

संयोगले- (उचावण संजोगले)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गद्यमे लै कक , पद्यमे क२ सकै छी ।)

क (जेना वामक)

वामक आ सँगे (उचावण वाम के / वाम क२ सेहो)

सँ- स२ (उचावण)

चन्द्रबिन्दु आ खनस्राव- खनस्रावमे कठ धविक प्रयोग होगत थछि कदा चन्द्रबिन्दुमे
लै । चन्द्रबिन्दुमे कनेक एकावक सेहो उचावण होगत थछि- जेना वामसँ- (उचावण
वाम स२) वामकें- (उचावण वाम क२/ वाम के सेहो) ।



कै जेना वामकै भेल हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकै

क जेना वामक भेल हिन्दीक का (वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेल हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेल हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते चाक शिष्ट सरहक प्रयोग खराडित ।

के दोसब अर्थे प्रहाज भ२ सकैए- जेना, के कहवक ? रिभजि “क”क रँदना एकव प्रयोग खराडित ।

नधि, नहि, नै, नग, नँग, नगँ, नगँ ई सबक उच्चारण आ लेखन - **नै**

अरु क रँदनामे अरु जेना महवपूर्ण (महवपूर्ण नै) जतए अर्थ रँदनि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक सहाजक प्रयोग उचित । सम्पति- उच्चारण स स प ग त (सम्पति नै- काव सही उच्चारण आसानीसँ सभुर नै) । क्रुदा सरोतिम (सरोतिम नै) ।

वास्तिव्य (वास्तिव्य नै)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोडैले/ पोडै लेल/ पोडैए लेल

पोडैए/ पोडैए/ (अर्थ परिवर्तन) पोडैए/ पोडै

ओ लोकनि (लो क२, ओ मे रिकारी नै)

ओअ/ ओहि

ओहिले/

ओहि लेल/ ओही व२

जवरौ/ रैसरौ

पँचभय्या

देखियोक/ (देखिओक नै- तहिना अ मे ज्ञान आ दीर्घक मात्राक प्रयोग खराडित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तै



होएत / रुएत

नहि/ नहि/ नग/ नग/ ने

सोसै/ सोसै

रैड /

रैडी (सोवाउव)

गाए (गाए नहि), रुदा गाएक दुध (गाएक दुध ने।)

बहलौ/ पहिबलौ

हमही/ थही

सरै - सभ

सरैलक - सभलक

धवि - तक

गप- रात

रूसरै - समयसरै

रूसलौ/ समयसलौ/ रूसनहुँ - समयनहुँ

हमवा आव - हम सभ

आकि- आ कि

सकैहु/ करैहु (गद्यमे प्रयोगक आरथकता ने)

होअन/ होनि

जाअन (जानि ने, जेना देन जाअन) रुदा जानि-रूसि (अर्थ परिवर्तन)

पअर/ जाअर

आड/ जाड/ आडु/ जाडु

मे, कै, सँ, पव (मेहसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (मेहसँ ल२ क२) रुदा दूठा रा रैसी
रिभजि संग बहनापव पहिब रिभजि ठाँके सँ क२ । जेना एमे सँ ।

एकठा , दूठा (रुदा क२ ठा)



रिंकावीक प्रयोग शिद्धक अन्तुमे, रीचमे अनारथक कर्पे ले । आकावास्तु आ अन्तुमे अ क रौद रिंकावीक प्रयोग ले (जेना दिअ

, आ/ दिय , आ, आ ले)

अपेक्षार्थक प्रयोग रिंकावीक रैदनामे कवरै अन्तुमे आ माव फाँष्टिक तकनीकी नूनताक पबिचायक)- उना रिंकावीक संस्कृत कप २ अरग्रह कहन जागत अछि आ रतनी आ उचावण दू ठाम एकव लोप बहैत अछि/ बहि सकैत अछि (उचावणमे लोप बहिने अछि) । ऊदा अपेक्षार्थक सेहो अंशेजामे पसेसिर केसमे होगत अछि आ फ्रेचमे शिद्धमे जतए एकव प्रयोग होगत अछि जेना *raison d'être* एतए सेहो एकव उचावण रैजोन डेष्टव होगत अछि, माने अपेक्षार्थक अरकाशे ले दैत अछि रवन जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिंकावीक रैदना देनाग तकनीकी कर्पे सेहो अन्तुमे) ।

अगमे, एहिमे/ एमे

जगमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

कै (के नहि) मे (अन्तुमे बहैत)

भ२

मे

द२

तँ (त२, त ले)

सँ (स२, स ले)

गाछ तब

गाछ वग

साँस खन

जो (जो go, करै जो do)

ते/तअ जेना- ते दुआरे/ तगमे/ तगने

जै/जअ जेना- जै कावण/ जगसँ/ जगने



ई/अग जेना- ई कावण/ ईसँ/ अगले/ झुदा एकव एकटा खस प्रयोग- नावति कतेक दिनसँ कहैत बहैत अग

ले/वग जेना लेसँ/ वगले/ ले दूखारे

नहँ/ ले

गेले/ लेले/ लेवहँ/ गेवहँ/ लेवहँ/ लेव

जग/ जाहि/ जे

जहिगाम/ जाहिगाम/ जगगाम/ जेगाम

एहि/ अहि/

अग (राक्यक अंतमे ब्राह्मण / ई

अगहु/ अहि/ ईहु

तग/ तहि/ ते/ ताहि

ओहि/ ओग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीर

भलेही/ भवहि

ते/ तँग/ तँ

जावर/ जवर

नग/ ले

हुग/ हे

नहि/ ले/ नग

गग/ ले

हुनि/ हुनि ...



समय शेरदक संग जखन कोनो रिभक्ति जूठै छै तखन समे जना समेपव
गत्यादि । असंगवमे **छदए** आ रिभक्ति जूठने छदे जना छदेसँ, छदेमे गत्यादि ।

जग/ जाहि/

जै

जहिठाम/ जाहिठाम/ जगठाम/ जैठाम

एहि/ अहि/ अग/ अँ

अगछ/ अछि/ अँछ

तग/ तहि/ ते/ ताहि

उहि/ उअ

सीथि/ सीथ

जोरि/ जोरी/

जीरँ

भने/ भनेही/

भवहि

तेँ/ तँग/ तँ

जाएरँ/ जएरँ

नग/ ने

छग/ छे

नहि/ ने/ नग

गग/

शै

छनि/ छन्हि

छकव अछि/ गेव गछि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम



नीचाँक सूचीमे देन रिकम्पमेसँ लैंग्ज एडीटव द्वावा कोन कप चुनन जेरौक चाही:
रौलेड कएन कप त्राह:

१. होयरँना/ होरँयरँना/ होमयरँना/ हेरँ रँना, हेम रँना/ होयरँक/होरँयरँवा /होयँरँक

२. था / था२

था

३. क जेने/क२ जेने/क३ जेने/क४ जेने/न/व२/नय/व३

४. भ गेन/भ२ गेव/भ३ गेन/भ४

गेव

५. कव गेनाह/कव२

गेवह/कव३ गेवाह/कव४ गेवाह

६.

विथ/दिथ विथ, दिय, विथ, दिय /

७. कव रँना/कव२ रँवा/ कव३ रँना कवैरँवा/क व रँना /

कवैरावा

८. रँवा रना (प्रकष), रानी (स्त्री) ९

.

आठ्ठ आठ्ठ

१०. प्रायः प्रायह

११. दुःख दुःख १

२. चनि गेन चव गेव/चैन गेन

१३. देवखिन्ह देवकिन्ह, देवखिन

१४.

देखवहि देखवनि/ देखजेन्ह

१५. छथिन्ह/ छवहि छथिन/ छनैन/ छवनि



१७. चलेत/दैत चवति/दैति

१७. एथनो

अथनो

१८.

रैठनि रैठजन रैठहि

१९. उ/उ२(सरनाम) उ

२०

उ (संयोजक) उ/उ२

२१. कागि/काग्नि कागगि/कागगु

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. केवहि/केवनि/कयवहि

२५. तखनत/ तखन त

२६. जा

बहव/जाय बहव/जाय बहव

२७. निकवय/निकवय

वागव/ वगव रैहवाय/ रैहवाय वागव/ वगव निकव/रैहवै वागव

२८. उतय/ जतय जत/ उत/ जतय/ उतय

२९.

की बुबव जे कि बुबव जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यादि(योन पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

यादि (योन)

३२. ओहो/ ओहो



३३.

हंसध/ हंसय हंस

३४. लो आकि दस/लो किंरा दस/ लो रा दस

३५. सास-सस्रव सास-सस्रव

३६. छह/ सात छ/छः/सात

३७.

की की/ की२ (दीर्घाकाराबुधे २ रजित)

३८. जरौरै जरारै

३९. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दवान दिशि दवान दिशि/दवान दिस

४१.

गेवाह गयवाह/गयवाह

४२. किछ आव/ किछ ँव/ किछ आव

४३. जाध छव/ जाधत छव जाति छव/जैत छव

४४. पहुँच/ भेट जाधत छव/ भेट जाध छव पहुँच/ भेट जाधत छव

४५.

जरौन (हरा)/ जरौन(होरी)

४६. वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

४७. व/व२ कय/

कय

४८. एथन / एथने / अथन / अथने

४९.

अहीके अहीके

५०. गहीव गहीव



ॐ.१.

धाव पाव केनाथ धाव पाव केनाथ/केनाथ

ॐ.२. जेकाँ जेकाँ

जकाँ

ॐ.३. तहिना तेहिना

ॐ.४. एकव थकव

ॐ.५. रहिनउ रहनोथ

ॐ.६. रहिन रहिनि

ॐ.७. रहिन-रहिनोथ

रहिन-रहनउ

ॐ.८. नहि/ ले

ॐ.९. कवरौ / कवरौथ/ कवरौथ

ॐ.१०. तँ/ त २ तय/तथ

ॐ.११. डेयारी मे छेठ-भाथ/डे, जेठ-भाथ/भाथ

ॐ.१२. गिनतीमे दू भाग/भाथ/भाथ

ॐ.१३. जा पोथी दू भागक/ भाँग/ भाथ/ नेन । यारत जारत

ॐ.१४. माथ मे / माथ रुदा माथक ममता

ॐ.१५. देखि/ दणन दनि/ दएहि/ दयहि दहि/ देखि

ॐ.१६. द / द२/ दथ

ॐ.१७. उ (संयोजक) उ२ (सरनाम)

ॐ.१८. तका कथ तकाय तकाथ

ॐ.१९. पैरे (on foot) पथर कथक/ कैक

१०.

तहमे/ तहमे



१९.

प्रतीक

१२.

रैजा कय/ कय / क२

१३. रैननाय/रैननाथ

१४. कोवा

१३.

दिनका दिनका

१७.

ततहिम

११. गवरौवहि/ गवरौवनि/

गवरौवहि/ गवरौवनि

१४. रौव रौव

१७.

चेह चिह(अक्षर)

+०. जे जे

+९

. से/ के से/के

+२. अथुनका अथुनका

+३. भूमिहाव भूमिहाव

+४. सुगव

/ सुगव/ सुगव

+३. सठहाक सठहाक +७.

छुरि



+१. कवगयो/उ करैयो ले देवक /कवियो-कवगयो

++ प्रवावि

प्रवाध

+२. सगड़ १-साँष्टी

सगड़ १-साँष्टी

२०. पधरे-पधरे पैरे-पैरे

२१. खेवखैरक

२२. खेलेखैरक

२३. वगा

२४. होध- हो - होध

२५. रूमव रूमव

२६.

रूमव (संरोधन अर्थमे)

२७. यैठ यधठ / अधठ/ सैठ/ सधठ

२८. तातिव

२९. अयनाय- अयनाग/ अयनाध/ एनाध

३०. निन्न- निन्द

३०९.

रिन्न रिन्न

३०२. जाध जाध

३०३.

जाध (i n different sense)-last word of sentence

३०४. छत पव आरि जाध

३०५.



ले

१०७. खेवाए (pl ay) – खेवाअ

१०९. शिकाअत- शिकायत

१०८.

ठप- ठप

१०९

. पठ- पठ

११०. कनिअ/ कनिये कनिअ

१११. बाकस- बाकस

११२. होअ/ होय होअ

११३. अडवदा-

अवदा

११४. बूमेवहि (different meaning- got understand)

११५. बूमअवहि/बूमेवनि/ बूमयवहि (understood himself)

११६. चनि- चव/ चवि गेव

११७. अथाअ- अथाय

११८.

मोन पाडवविह/ मोन पाडवविन/ मोन पाववविह

११९. कैक- कअक- कअअक

१२०.

वग वग

१२१. जवनाअ

१२२. जवनाअ जवनाअ- जवनाअ/

जवनाअ



१२३. होषत

१२४.

गवरैवहि/ गवरैवनि गवरौवहि/ गवरौवनि

१२५.

टिथैत- (t o t e s t) टिथैत

१२६. कवअयो (willing t o d o) करैयो

१२७. जेकवा- जकवा

१२८. तकवा- तेकवा

१२९.

रिदेसब स्थानमे/ रिदेसरे स्थानमे

१३०. कवरैयनहुँ/ कवरैएनहुँ/ कवरैएनहुँ कवरैएनहुँ

१३१.

हाकि (उचावण हाकि)

१३२. ओजन रजन आकसोच/ आकसोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. आधे भाग/ आध-भागे

१३४. पिचा / पिचाय/पिचाए

१३५. नए/ ने

१३६. रैछा नए

(ने) पिचा जाय

१३७. तखन ने (नए) कहेत अछि । कहे/ सुने/ देखे छव दूदा कहेत-कहेत/ सुनेत-
सुनेत/ देखैत-देखैत

१३८.

कतेक गोठै/ कताक गोठै

१३९. कमाअ-धमाअ/ कमाअ- धमाअ



547X VIDEHA

१४०

. वग वग

१४१. खेलना (f or pl ayi ng)

१४२.

छवि/ छवि

१४३.

होत होत

१४४. का किया / केउ

१४५.

केश (hai r)

१४६.

केस (court -case)

१४७

. रेंनाथ/ रेंनाथ/ रेंनाथ

१४८. जलनाथ

१४९. कबरी कबरी

१५०. चचा चचा

१५१. कर्म कर्म

१५२. डूँरै/ डूँरै/ डूँरै डूँरै/ डूँरै

१५३. एथनका/

अथनका

१५४. वध/ विश्व (राकाक अंतिम गेह)- वध

१५५. कवक/

केक



१३.७. गवयी गर्मी

१३.१

. रवदी रदी

१३.४. सुना गेवाठ सुना/सुना२

१३.६. एनाथ-गेनाथ

१३.७.

तेना ले घेबवहि/ तेना ले घेबवनि

१३.८. नथि / ले

१३.९.

डरो डरो

१३.१०. कठह/ कठो कठी

१३.११. उमबिगब-उमेबगब उमबगब

१३.१२. भकिगब

१३.१३. धोव/धोखव धोएव

१३.१४. गप/गप्प

१३.१५.

के के

१३.१६. दवरैज्जा/ दवरैजा

१३.१७. ठाय

१३.१८.

धवि तक

१३.१९.

घुबि लोष्ट

१३.२०. थोवरैक



547X VIDEHA

११४. रूढ

११५. रौ/ रू

११६. रौहि (पद्यमे त्राह)

११७. रौही / रौहि

११८.

कवरौअ कवरौअये

११९. एकेटी

१२०. कवितथि / कवतथि

१२१.

पहुँचि/ पहुँच

१२२. बाखवहि बखवहि/ बखवनि

१२३.

वगवहि/ वगवनि वागवहि

१२४.

अनि (उचावण अणन)

१२५. अछि (उचावण अगछ)

१२६. एवथि गेवथि

१२७. रिंतोने/ रिंतोने/

रिंतोने

१२८. कवरौवहि/ कवरौवनि/

करेवथिह/ करेवथिन

१२९. कवएवहि/ करेवनि

१३०.

आकि/ कि



१९१. पड़ुँचि/

पड़ुँच

१९२. रँझी जवाय/ जवाय जवा (आगि नगा)

१९३.

से से

१९४.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिभक्तिमे ल्हा कय)

१९५. खेव खेव

१९६. खेव(spaci ous) खेव

१९७. होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/हेतनि/ हेतहि

१९८. हाथ मटिआएँ/ हाथ मटियारैय/हाथ मटियाएँ

१९९. खेका खेका

२००. देखाए देखा

२०१. देखारैय

२०२. सतवि सतव

२०३.

साठेरै साठेरै

२०४. गेलैह/ गेलहि/ गेलनि

२०५. तेरौक/ होयराक

२०६. केनो/ कएनहँ/केनो/ केन

२०७. किड न किड/

किड न किड

२०८. घुमेनहँ/ घुमोनहँ/ घुमेनो

२०९. एवाक/ अवाक



547X VIDEHA

२१०. अः / अह

२११. वय/

वय (अर्थ- परिवर्तन) २१२. कनीक/ कनेक

२१३. मरैलक/ मलक

२१४. मिता२/ मिवा

२१५. क२/ क

२१७. जा२/

जा

२१९. आ२/ आ

२१९. भ२ / भ (कालिक कमीक छातक)

२२०. निश्चय/ नियम

२२०

.लेबलैथव/ लेबलैथव

२२१. पहिव अक्षर ठा/ रौदक/ रौचक ठा

२२२. तहि/तहि/ तहि/ तै

२२३. कहि/ कही

२२४. तँ/

तै / तँ

२२५. नँ/ नँ/ नहि/ नहि/ले

२२७. तै/ तै / एवीहै/

२२९. छहि/ छै/ छैक / छग

२२९. दृष्टि/ दृष्टि

२२९. आ (come)/ आ२(conjunct i on)

२३०.



आ (conjunct i on)/ आर(come)

२३१. कनो/ कनो कनो/कनो

२३२. गेलोह-गेवहि-गेवनि

२३३. हेरौक- होएरौक

२३४. केनो- कएनो-कएनहूँ/केनो

२३५. किछ न किछ- किछ न किछ

२३६. केहन- केहन

२३७. आर (come)-आ (conjunct i on-and)/आ । आर-आर /आरह-आरह

२३८. हएत-हैत

२३९. घुमेनहूँ-घुमएनहूँ- घुमेनो

२४०. एवाक- अएवाक

२४१. होनि- होअन/ होहि/

२४२. ओ-बाम ओ आमक रौट(conjunct i on), ओ कहक (he said)/ओ

२४३. की हए/ कोसी अएवी हए/ की है । की हए

२४४. दृष्टिअ/ दृष्टियै

२४५.

.गोयिब/ सामेव

२४६. तै / तै/ तहि/ तहि

२४७. जौ

/ जाँ/ जाँ

२४८. सभ/ सभ

२४९. सभक/ सभक

२५०. कहि/ कही

२५१. कनो/ कनो/ कनहूँ/



२३.२. **काबकती भ२ गेव/ भ३ गेव/ भ४ गेव**

२३.३. **केना/ केना/ कना/ कना**

२३.४. **खः / खः**

२३.५. **जने/ जनः**

२३.६. **गेवनि/**

गेवनि (अर्थ परिवर्तन)

२३.७. **केवनि/ केवनि/ केवनि/**

२३.८. **वय/ वय/ वय (अर्थ परिवर्तन)**

२३.९. **कनीक/ कनीक/ कनी-मनी**

२३.१०. **पठेवनि पठेवनि/ पठेवनि/ पठेवनि/ पठेवनि/**

२३.११. **निश्चय/ नियम**

२३.१२. **हेक्टैयव/ हेक्टैयव**

२३.१३. **पठिब अक्षर बहने ट/ रीचमे बहने ट**

२३.१४. **आकाबान्तमे रिक्काविक प्रयोग उचित नै/ अपोस्ट्रॉफिक प्रयोग हान्स्टिक तकनीकी नूनताक पविचायक ओकव रैदना अरग्रह (रिक्कावी) क प्रयोग उचित**

२३.१५. **केव (पद्यमे ब्राह्म) / -क/ क२/ के**

२३.१६. **टैन्डि- टैन्डि**

२३.१७. **वगैथ/ वगैथे**

२३.१८. **हेवत/ हेवत**

२३.१९. **जावत/ जावत/**

२३.२०. **आवत/ आवत/ आवत**

२३.२१.

. आवत/ आवत/ आवत

२३.२२. **पिअरौक/ पिअरौक/पियरौक**



२१३. शुक्र/ शुक्र

२१४. शुक्रते/ शुक्र

२१५. अतार/ अतार/ एतार/ अतार

२१६. जाहि/ जाग/ जग/ जै

२१७. जागत/ जैतए/ जगतए

२१८. आधव/ अधव

२१९. कैक/ कक

२२०. आयन/ अधन/ अधव

२२१. जाध/ जगध/ जग (नानति जाध नगतीह ।)

२२२. नकधन/ नकाधव

२२३. कर्तृआधव/ कर्तृअधन

२२४. ताहि/ तै/ तग

२२५. गायरै/ गाधरै/ गधरै

२२६. सकै/ सकध/ सकय

२२७. सेवा/ सवा/ सवाध (भात सवा गेन)

२२८. कठैत बरी/ देवेत बरी/ कठैत छलौ/ कठैत छलौ- अहिना छलैत/ पटैत

(पटै-पटैत अर्थ कथनो काव परिवर्तित) - आव बुमै/ बुमैत (बुमै/ बुमै छी दूदा बुमैत-बुमैत)/ सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। डैक/ डै। रचलै। वखरौ/ वखरौक । रिन/ रिन। बातिक/ बाहुक बुमै आ बुमैत केव अपन-अपन जगहपव प्रयोग समीचीन अछि। बुमैत-बुमैत आरै बुमविर्ष। हमर बुमै छी।

२२९. दुआरे/ दारै

२३०. भैष्ट/ भैष्ट/ भैष्ट

२३१.

खन/ खीन/ खुना (भोव खन/ भोव खीन)

२३२. तक/ धवि



३५२. खवाग/ खवारें

३५३. रौगन/ रौनि/ रौगनि

३५४. जार्ति/ जाथठ

३५५. कागज/ कागच/ कागत

३५६. गिले (meaning different – swallow)/ गिरण (थसए)

३५७. वास्तिव/ वास्तिव

DATE-LIST (year – 2013-14)

(१४२९ कसवी साव)

Marriage Days:

Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13

January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

March 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

Upanayana Days:

February 2014- 2, 4, 9, 10.

March 2014- 3, 5, 11, 12.

April 2014- 4, 9, 10.



June 2014- 2, 8, 9.

Dviragaman Din:

November 2013- 18, 21, 22.

December 2013- 4, 6, 8, 9, 12, 13.

February 2014- 16, 17, 19, 20.

March 2014- 2, 3, 5, 9, 10, 12.

April 2014- 16, 17, 18, 20.

May 2014- 1, 2, 9, 11, 12.

Mundan Din:

November 2013- 20, 22.

December 2013- 9, 12, 13.

January 2014- 16, 17.

February 2014- 6, 10, 19, 20.

March 2014- 5, 12.

April 2014- 16.

May 2014- 12, 30.

June 2014- 2, 9, 30.

FESTIVALS OF MTHILA (2013-14)

Mauna Panchami -27 July

Madhushravani - 9 August



Nag Panchami – 11 August

Paksha Bandhan– 21 Aug

Krishnastami – 28 August

Kushi Amavasya / Somvati Vrat – 5 September

Hartalika Teej – 8 September

Chauth Chandra–8 September

Vishwakarma Pooja– 17 September

Anant Chaturdashi – 18 Sep

Pitri Paksha begins– 20 Sep

Jimootavahan Vrat a/ Jitika–27 Sep

Matri Navami –28 Sep

Kalashstapan– 5 October

Belauti – 10 October

Patrika Pravesh– 11 October

Mahastami – 12 October

Maha Navami – 13 October

Vijaya Dashami – 14 October

Kojagara– 18 Oct

Dhanteras– 1 November

Diyaoti, shyama pooja–3 November

Anakoota/ Govardhana Pooja–4 November



Bhr at ri dwi ti ya/ Chi t r agupt a Pooj a- 5 November

Chhat hi -8 November

Sama Pooj aar ambh- 9 November

Devot t han Ekadashi - 13 November

r avi vr at ar ambh- 17 November

Navanna par van- 20 November

Kart i kPoor ni ma- Sama Vi sar j an- 2 December

Vi vaha Panch mi - 7 December

Makar a/ Teel a Sankr ant i -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 29 January

Basant Panch mi / Sar aswat i Pooj a- 4 February

Achl a Sapt mi - 6 February

Mahashi var at ri -27 February

Hol i kadahan-Fagua-16 Mar ch

Hol i - 17 Mar ch

Sapt ador a- 17 Mar ch

Var uni Tr ayodashi -28 Mar ch

Jur i shi t al -15 April

Ram Navami - 8 April

Akshaya Tritiya-2 May

Janaki Navami - 8 May



Ravi Br at Ant – 11 May

Vat Savitri –barasait – 28 May

Ganga Dashhar a–8 June

Hari vasar Vr at a– 9 July

Shree Gur u Poor ni ma–12 Jul

VI DEHA ARCHI VE

पत्रिकाक सब्ठा पुरान अंक ब्रैल-रिदेह आ तिरहुता आ देरनागरी रूपमे Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह आ अंक ३.० पत्रिकाक पहिल -

रिदेह आ म स आगाँ अंक ३.० पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/>

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

३. डिओ संकलन आ मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४. मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video>

५. आधुनिक चित्रकला आ चित्र /मिथिला चित्रकला. Mthila Painting/ Modern Art and Photos



<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

-बिदेह-क एहि सब सहयोगी विक्रम सेहो एक रैब जाड ।

७.बिदेह मैथिली क्लिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१.बिदेह मैथिली जानरूत एक्कीगैठव :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४.बिदेह मैथिली साहित्य अंशेजरीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६.बिदेहक पूर-कप "भारतसर्विक गाढ" :

<http://gajendratnakur.blogspot.com/>

१०.बिदेह गडैक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११.बिदेह हागत :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहुता (मिथिला-रूब) जानरूत (रूनाँ)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह:रैब: मैथिली रैबमे: पहिल रैब बिदेह द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VIDEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका मैथिली पौथीक आकाश

<http://videha-pothi.blogspot.com/>



१७. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद आ पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१८. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद आ पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१९. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद आ पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

२०. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सबसँ लोकप्रिय जानबूझ)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२०श्रुति प्रकाशन

<http://www.shruti-publication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>

२२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेकर

<http://gajendrat hakur123.blogspot.com>

२४. मेना भुठका


<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२५. बिदेह रेडियोकारिता आदिक पहिल पौडकास्ट सांठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२७.  Videha Radio



२१.  Join official Videha facebook group.

२२. बिदेह मैथिली नाष्ठ ँसर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२३. समदिया

<http://esamaad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अनचिन्हार आखर

<http://anchinharakharakolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाकु

<http://maithili-haiku.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. बिहनि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३७. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३१. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>



महत्त्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



विदेह:सदेह:१: २: ३: ४:५:६:७:८:९:१० "विदेह"क प्रिंठ संस्करण: विदेह-५-पत्रिका
(<http://www.videha.co.in/>) क छन बचना सम्मिलित ।



सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at publisher's (print - version) site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to shruti.publication@shruti-publication.com

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c)२००४-१३. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए सम्पादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ-पत्रिका । SSN 2229-547X
VI DEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-सम्पादक: उमेश मंडल । सहायक सम्पादक: शिर कमार सा आ कुमारी (मनोज कमार कर्ण) । भाषा-सम्पादन: नागेन्द्र कमार सा आ पञ्जीकार बिद्यानन्द सा । कला-सम्पादन: ज्ञाति सा चौधरी आ बप्पि बेथा सिन्हा । सम्पादक-शोध-अनुसंधान: डा. जया रमा आ डा. बाजीर कमार रमा । सम्पादक- नाटक-वर्गमंच-चवटि- रचन ठाकुर । सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पुनम मंडल आ प्रियंका सा । सम्पादक- अनुराद रिताग- रितित उपेव ।

बचनाकाब अपन मौलिक आ अप्रकाशित बचना (जेकर मौलिकताक संपूर्ण उतुवदायित्व लेखक गणक मध्य छति) ggajendra@videha.com केँ मेर अटैचमेण्टक रूपमें .doc, .docx, .rtf रा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाब अपन सम्पिष्ट पविचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठैतह, से आशी करैत छी । बचनाक अंतमें ठागप बहय, जे ङ बचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशिनक हेतु बिदेह (पाष्किक) ङ पत्रिकारुँ देल जा बहन अछि । मेर प्राप्त होयरक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकब प्रकाशिनक अंकक सूचना देल जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका अछि आ ईमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित बचना प्रकाशित कएल जायत अछि । एहि ङ पत्रिकारुँ श्रीमति नम्रा ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिरुँ ङ प्रकाशित कएल जायत अछि ।

(c) 2004-13 सर्वाधिकार सुरक्षित । बिदेहमें प्रकाशित सबटा बचना आ आर्काइवरक सर्वाधिकार बचनाकाब आ संग्रहकर्ताक नगमें छति । बचनाक अनुराद आ पुनः प्रकाशिन



किंरा आकर्षक उपयोगक अधिकार किनराक हेतु ggajendra@videha.com पब
संपर्क करू । एहि सागठकेँ प्रति न्ना ठारूब, मधुनिका चौधरी आ बन्नि प्रिया द्वारा
डिजाइन कएल गेल ।



सिंहबट्ट

